प्रवेशिका

साक्षरता निकेतन प्रकाशन

प्रवेशिका

साक्षरता निकेतन प्रकाशन

NAI RAH

नई राह

(प्रौढ़ों की प्रवेशिका एवं अभ्यास पुस्तिका)

रचना मंडल

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी
वीरेन्द्र त्रिपाठी
आनन्द प्रकाश
विश्वनाथ सिंह
ए० के० जलालुद्दीन

आवरण एवं कलापक्ष

राजेन्द्र श्रीवास्तव एवं के० जी० सिंह

प्रकाशक

साक्षरता निकेतन
पो० आलमबाग
लखनऊ- 226005

आठवां संशोधित संस्करण

मुद्रक
प्रकाश पैकेजर्स
257-गोलागंज, लखनऊ-226018

प्रवेशिका के प्रथम संस्करण के सम्बन्ध में

प्रो० लाबाक पहले साक्षरता विशेषज्ञ थे, जिन्होंने प्रौढ़ों को पढ़ाने के लिए भारतीय भाषाओं में अक्षरों के ध्वनि-परक संयोजन का महत्त्व समझा। यह निकेतन के लिए गर्व का विषय है कि श्री लाबाक ने आज से बीस वर्ष पहले निकेतन के लिए हिन्दी में पहली प्रवेशिका तैयार की। तदुपरान्त धीरे-धीरे अपने देश में साक्षरता-प्रवेशिकाओं के निर्माण में शब्द पद्धति, वाक्य पद्धति एवं प्रचलित मिश्रित पद्धति का प्रवेश हुआ। यह भी बिना क्षेत्र के अध्ययन या अनुसंधान से किया गया तथा इसमें प्रौढ़ पाठक एवं अनुदेशक की सक्रिय भागीदारी नहीं के बराबर रही। हममें से उन लोगों ने, जिन्हें साक्षरता शिक्षकों और प्रौढ़-पाठकों के साथ निकटता से सम्मिलित होकर कार्य करने का अवसर मिला है, देखा है कि नई पद्धति पर बनी हुई पठन-पाठन सामग्री का प्रयोग करने में उन्हें कितनी कठिनाई हुई है। बहुधा "शब्द पद्धति" पर बनी हुई प्रवेशिका को शिक्षक ने दूसरी पुस्तक के रूप में प्रयोग किया है और अक्षरों का ज्ञान देने के लिए उसने वर्णमाला पर आधारित किसी स्थानीय पुस्तक का उपयोग कर लिया है। धन्य है देवनागरी वर्णमाला का ध्वनि-परक एवं लयात्मक संयोजन, जिसे निरक्षर प्रौढ़ ने भी अक्षर की ध्वनि और आकार का स्मरण रखने के लिए अधिक सहज और सरल माना है।

उपर्युक्त व्यावहारिक अनुभव को ध्यान में रखते हुए साक्षरता निकेतन ने साक्षरता-कार्यकर्ताओं, विशेषज्ञों तथा रचनात्मक लेखकों को मिलाकर कई शिविर आयोजित किए और उनमें तीन विभिन्न पद्धतियों पर आधारित तीन प्रवेशिकाओं का निर्माण किया गया। इन तीन प्रवेशिकाओं को ग्रामीण प्रौढ़ शिक्षा परियोजना के क्षेत्र में वैयक्तिक एवं वर्गगत स्थितियों में देखा-परखा गया। प्रस्तुत प्रवेशिका "नई राह" की पांडुलिपि प्रौढ़-पाठकों एवं प्रौढ़-शिक्षकों के लिए सरलतम और रुचिकर पाई गई।

"नई राह" में देवनागरी स्वर और व्यंजन उसी ध्वनि-परक योजना में दिये गए हैं, जिस प्रकार वे वर्णमाला में हैं। अन्तर केवल इतना है कि स्वर पहले सिखाये गए हैं और व्यंजन बाद में। मात्राओं को विभिन्न वर्गों के बीच-बीच में सिखाया गया है, जैसे क-वर्ग के बाद (ा) की मात्रा, च-वर्ग के बाद (ि, ी) की मात्रा तथा ट-वर्ग के बाद (ु, ू) की मात्रा, ताकि सार्थक शब्द और वाक्य भी बनते चलें। यह प्रयत्न किया गया है कि प्रत्येक अक्षर को उस शब्द से जोड़ा जाय, जो प्रौढ़ के लिए रुचिकर और महत्त्वपूर्ण हो। अनुदेशक से यह आशा की जाती है कि वह केवल अक्षर की ध्वनि को सुझाये गए शब्द और चित्र से ही नहीं जोड़ेगा, वरन् उस विचार पर भी चर्चा करेगा, जो विचार अथवा विषय पाठ के चित्र में दिया गया है। अनुदेशक से यह भी आशा की गई है कि वह प्रौढ़ों को ऐसे अन्य शब्द बताने के लिए

कहें, जिनमें उस पाठ में सिखाये गए अक्षर की ध्वनि पहचानी जा सके। इस प्रकार प्रवेशिका में दिये गए पाठ केवल उदाहरणस्वरूप हैं और इन पाठों का मुख्य वैचारिक ढाँचा धीरे-धीरे अनुदेशक और प्रौढ़ों द्वारा अपने अनुभव और स्थानीय वातावरण के आधार पर विकसित किया जाना है। यह भी प्रयत्न किया गया है कि चाहे एक शब्द या दो शब्द के वाक्य हों, परन्तु उस पाठ में सिखाये गए अक्षर से बनने वाले शब्दों के माध्यम से सार्थक वाक्य बने, ताकि प्रौढ़ों को भाषा के व्यावहारिक प्रयोग के प्रति जागृत बनाया जा सके।

प्रवेशिका का एक मुख्य बिन्दु यह भी है कि इसमें अभ्यास-पुस्तिका को जोड़ा गया है, ताकि साक्षरता-केन्द्र में ही "जिज्ञासा एवं समस्या-समाधान-पद्धति" पठन-पाठन का एक हिस्सा बन जाय। प्रौढ़ों को अपने हाथ से मिट्टी, बालू, स्लेट अथवा कागज पर उँगली, खड़िया अथवा पेंसिल से लिखने के लिए प्रेरणा देते रहना चाहिए, साथ ही जब उनकी तैयारी हो जाय, तो अभ्यास-पुस्तिका की खाली जगहों को लिखकर भरने में सहायता देनी चाहिए।

गणित के पाठ भी साक्षरता-पाठों के साथ-साथ पढ़ाये जाने का सुझाव दिया गया है। अन्तर्राष्ट्रीय अंकों का परिचय पहले कराया गया है और तब देवनागरी अंकों का। इसी प्रकार प्रारम्भिक अंकगणित और उस पर आधारित अभ्यासों को धीरे-धीरे लाया गया है। साथ ही संख्या को गिनना और लिखना अंकों और इबारत दोनों में बताया गया है। एक अंक की संख्याओं का जोड़ समानान्तर व लम्बवत्, दोनों तरह से प्रस्तुत किया गया है। अंकगणित के पाठ, दो अंकों की संख्या में से एक अंक की संख्या घटाने के साथ समाप्त होते हैं। जब भी कोई प्रौढ़ गणित के किसी अभ्यास को कठिन पाता है, तो अनुदेशक से यह आशा की जाती है कि वह कोई संशोधित आसान अभ्यास देगा। उस अभ्यास में या तो वह छोटे अंकों का प्रयोग करेगा या फिर पहले सीखे गए अभ्यास को दुहरायेगा, जिसमें वह पहले से कुछ भिन्न अंकों का प्रयोग करेगा। इसमें प्रौढ़ को न केवल अपने कौशल को दुहराने का अभ्यास होगा, बल्कि वह इन अभ्यासों का सामान्यीकरण कर सकेगा तथा इनमें निहित दक्षता को समझ सकेगा।

साक्षरता के पाठों का अन्त उस स्तर पर हुआ है, जहाँ से प्रौढ़ संयुक्ताक्षरों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए तैयार है। संयुक्ताक्षर प्रवेशिका के बाद की रीडरों में दिये जायेंगे। ये रीडर इस समय साक्षरता निकेतन में तैयार की जा रही हैं।

प्रसिद्ध कवि, लेखक और साक्षरता निकेतन के भूतपूर्व निदेशक श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी ने **'नई राह'** के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाई है। मेरे वरिष्ठ सहयोगियों—श्री वीरेन्द्र त्रिपाठी, श्री विश्वनाथ सिंह, श्री आनन्द प्रकाश और मैंने स्वयं—मिलकर अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार पाठों के निर्माण, विश्लेषण और संयोजन में सहयोग दिया है। मैं प्रवेशिका की रचना में सहयोग के लिए श्री माहेश्वरी और अपने सहयोगियों के प्रति कृतज्ञ हूँ।

मोहनलालगंज परियोजना के परियोजनाधिकारी श्री भवानी शंकर उपाध्याय तथा उनके समर्पित और भली प्रकार निर्देशित किये गए पर्यवेक्षकों और अनुदेशकों के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रवेशिका की पूर्व परीक्षा में उसके मूल विचार, उसकी योजना और तैयारी से सम्बन्धित विभिन्न स्तरों पर सहायता की।

प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, उत्तर प्रदेश के निदेशक श्री पी० के० शुक्ल और उनके सहयोगियों का मैं अत्यधिक कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने प्रवेशिका के रचना-मंडल के साथ सतत् विचार-विमर्श किया और अपने बहुमूल्य सुझाव दिये।

ए० के० जलालुद्दीन
निदेशक
साक्षरता निकेतन

लखनऊ
अप्रैल, 1983

द्वितीय संस्करण के सम्बन्ध में

"नई राह" प्रवेशिका इसके पहले भी अपनी कई मंजिलें तय कर चुकी है। इस समय वह अपने नए मोड़ पर है। इसके प्रथम प्रकाशन के वाद से ही इसके सम्बन्ध में विभिन्न क्षेत्रों से प्रतिक्रियाएं प्राप्त होती रहीं, कुछ सुझाव भी आये। भारत सरकार तथा राज्य सरकार के प्रौढ़ शिक्षा निदेशालयों के विषय-विशेषज्ञों एवं क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं ने कुछ उपयोगी सुझाव दिये। उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की कि इस प्रवेशिका में जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी कुछ सामग्री का भी समावेश किया जाय। इसके लिए भारत सरकार के प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय ने हमें साधन भी उपलब्ध कराये।

विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त सुझावों को कार्यान्वित करने के पूर्व इन पर विस्तारपूर्वक विचार करने के लिए साक्षरता निकेतन द्वारा दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, जिसमें जनसंख्या शिक्षा के विशेषज्ञों ने भाग लिया। इन कार्यशालाओं में सम्पूर्ण प्रवेशिका का भलीभाँति निरीक्षण किया गया तथा जनसंख्या एवं पर्यावरण के प्रति प्रतिभागियों को जागरूक करने के लिए उपयुक्त सामग्री शामिल की गयी।

"नई राह" के इस संस्करण में संयुक्ताक्षरों को अन्तिम पाठों के साथ जोड़ दिया गया है तथा देवनागरी अंकों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय अंक भी दिये गये हैं। प्रवेशिका का आकार यथापूर्व ही रखा गया है।

इस प्रवेशिका को प्रस्तुत रूप देने में राज्य के शिक्षा सचिव श्री जगदीश चन्द्र पन्त ने व्यक्तिगत रुचि ली और समय-समय पर कृपापूर्वक अत्यन्त उपयोगी सुझाव दिये। इन सुझावों ने पुस्तक की उपादेयता वढ़ा दी है। हम इस अनुग्रह के लिए उनके आभारी हैं।

कार्यशालाओं के माध्यम से प्रवेशिका को नया रूप देने में श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी, श्री शिवशंकर मिश्र, श्री लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय', डा० निर्मल सहानी, श्री राम भरोसे, श्रीमती मनोरमा श्रीवास्तव, श्री भवानी शंकर उपाध्याय, श्रीमती शीला त्रिवेदी, श्री विश्वनाथ सिंह और श्री श्याम लाल ने अपना सराहनीय योगदान दिया। इन सवके प्रति हम धन्यवाद ज्ञापन करते हैं। साथ ही हम उन सभी परियोजना अधिकारियों, पर्यवेक्षकों एवं अनुदेशकों के प्रति भी कृतज्ञ हैं, जिन्होंने प्रस्तुत संस्करण को और अधिक उपयोगी एवं सार्थक वनाने के लिए बहुमूल्य सुझाव भेजे हैं।

आशा है कि प्रवेशिका का यह संस्करण और अधिक उपयोगी एवं सर्वग्राह्य सिद्ध होगा। फिर भी यह मानकर कि रचना प्रक्रिया सतत् गतिशील होती है और उसमें समयानुकूल परिमार्जन की आवश्यकता बनी रहती है, इस संस्करण के बारे में विशेषज्ञों के सुझाव एवं क्षेत्र में कार्यरत सहयोगियों की प्रतिक्रियाएं प्राप्त कर हमें अत्यन्त प्रसन्नता होगी।

गणेश शंकर चौधरी
निदेशक
साक्षरता निकेतन

लखनऊ
1986

तृतीय संस्करण की भूमिका

"नई राह" प्रवेशिका के इस संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण को प्रस्तुत करते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता है। इसका द्वितीय संस्करण सन् 1986 में प्रकाशित हुआ था। उसके उपरान्त प्रौढ़ शिक्षा विशेषज्ञों, क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं, राज्य सरकार एवं प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय के अधिकारियों से अनेक उपयोगी सुझाव प्राप्त होते रहे।

अभी तक इस प्रवेशिका की निर्देशिका अलग थी, किन्तु प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर पठन-पाठन प्रक्रिया के अवलोकन से यह अनुभव किया गया कि बहुधा अनुदेशकों द्वारा शिक्षक-निर्देशिका का नियमित उपयोग नहीं किया जा रहा है। इस कारण शिक्षण-प्रक्रिया उतनी प्रभावी नहीं हो पाती है, जितनी अपेक्षित है।

इस स्थिति पर विचार-विमर्श करने के लिए साक्षरता निकेतन में प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं, राज्य प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय के अधिकारियों तथा प्रौढ़ शिक्षा विशेषज्ञों की एक कार्य-गोष्ठी आयोजित की गई। इस गोष्ठी में प्रदेश के प्रौढ़ शिक्षा निदेशक, श्री ईश्वर शरण गौड़ ने यह सुझाव दिया कि प्रवेशिका का एक शिक्षक-शिक्षार्थी संस्करण अलग से तैयार किया जाय। इस संस्करण में यथोचित संशोधन के बाद उस समस्त सामग्री का समावेश किया जाय, जो शिक्षक-निर्देशिका में दी गई है तथा जिसका संकेत नेशनल लिट्रेसी मिशन (राष्ट्रीय साक्षरता अभियान) में दिया गया है। इससे अनुदेशकों को चर्चा के लिए विषय-सामग्री, पठन-विधि, प्रवेशिका की पठन-सामग्री तथा अभ्यास एक साथ सुलभ रहेंगे और अनुदेशक इसका सार्थक और प्रभावपूर्ण उपयोग करने में सक्षम हो सकेंगे।

इस सुझाव को ध्यान में रखकर प्रवेशिका का यह शिक्षक-शिक्षार्थी संस्करण प्रस्तुत किया गया है। आशा की जाती है कि इससे साक्षरता प्रदान करने के साथ-साथ प्रौढ़ शिक्षा के अन्य आयामों—सामाजिक चेतना तथा व्यावसायिकता का लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

इस संस्करण में चर्चा-बिन्दुओं तथा उनसे सम्बन्धित सामग्री में यथावश्यक संशोधन किये गए हैं। संशोधन और परिवर्द्धन के समय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के केन्द्रीय पाठ्यक्रम में समाविष्ट विषयों— राष्ट्र-प्रेम, राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक धरोहर, समतावादी समाज, सर्वधर्म समभाव, जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरण, नर-नारी समानता, वैज्ञानिक दृष्टि का विकास आदि विषयों से सम्बन्धित प्रसंगों को अधिक उजागर किया गया है। पाठों की सामग्री को अधिक सोद्देश्य बनाने तथा उनमें आये हुए शिक्षण बिन्दुओं को उभारने की दृष्टि से प्रत्येक पाठ के मूल विषय की चर्चा के उपरान्त प्रश्न दिये गए हैं। इससे पाठ्य सामग्री का बोध कराने तथा उसमें निहित जीवन-मूल्यों को समझाने में अनुदेशक को सहायता मिलेगी। साथ ही प्रतिभागियों में वैज्ञानिक ढंग से सोचने-विचारने तथा भावों और विचारों को मौखिक एवं लिखित रूप में व्यक्त करने की क्षमता का भी विकास होगा।

इस संस्करण को वर्तमान स्वरूप देने के लिए निदेशक, प्रौढ़ शिक्षा, श्री ईश्वर शरण गौड़ के सक्रिय सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया जाता है।

इस पुस्तक को और उपयोगी बनाने के लिए प्रौढ़ शिक्षा के सभी विशेषज्ञों, कार्यकर्ताओं एवं विद्यार्थियों के सुझाव आमंत्रित हैं।

गणेश शंकर चौधरी
निदेशक
साक्षरता निकेतन

25 सितम्बर, 1987

दो शब्द

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के उद्देश्यों की सफलता में पठन-पाठन सामग्री का महत्त्वपूर्ण योगदान है। मिशन ने मानक पठन-पाठन सामग्री की रूपरेखा भी दी है। इसमें जोर इस बात पर दिया गया है कि यह मानक सामग्री ऐसी हो जो (अ) प्रौढ़ों की कार्यात्मक दक्षता बढ़ा सके, उनके कौशल का विकास कर सके तथा आर्थिक कार्यकलाप से जुड़ी हुई हो, (ब) इसमें व्यक्तिगत, कौटुम्बिक, सामाजिक गतिविधियों, समस्याओं से सम्बन्धित कुछ न कुछ चेतना जागृति के बिन्दु अवश्य हों, (स) विभिन्न वर्गों, भाषाओं, धर्म और प्रान्तों में विभाजित होते हुए देश की समस्याओं के प्रति प्रौढ़ को सजग करते हुए उसे राष्ट्रीय एकात्मता तथा सांस्कृतिक मूल्यों के लिए अभिप्रेरित किया जा सके, (द) कोई भी साक्षरता अथवा गणित का क्षेत्र ऐसा न हो जो प्रौढ़ों के जीवन, रुचियों और आवश्यकताओं को स्पर्श न करता हो।

मानक पठन-पाठन सामग्री में ऐसी शैक्षिक विधि पर बल दिया गया है जिससे साक्षरता सम्बन्धी दक्षताएं केवल 6 महीने के भीतर प्राप्त हो सकें। सामग्री में ही परीक्षण और मूल्यांकन की विधि भी जुड़ी हो, साथ ही जो कसौटियां सामग्री निर्माण के विषय में मानव संसाधन विकास एवं शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित की गई हों उन कसौटियों के आधार पर भी सामग्री जाँची परखी जा सके।

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की सफलता के लिए क्षेत्रीय बोलियों एवं उनके आधार पर निर्मित सामग्री को विशेषज्ञों ने अधिक उपयुक्त माना है। यह कहा गया है कि स्थानीय बोली के आधार पर भाषा सिखाने का कार्य सहज होगा, साथ ही प्रौढ़ को अधिक ग्राह्य एवं सुपाच्य भी होगा।

सामग्री निर्माण सम्बन्धी इन उपर्युक्त विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए साक्षरता निकेतन द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण मूल साक्षरता सामग्री का आद्योपांत संशोधन किया गया है। मुझे प्रसन्नता है कि मेरे परामर्श के अनुसार यह कार्य पूरा हो गया। निःसंदेह यह सामग्री साक्षरता मिशन के उद्देश्यों को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगी।

ईश्वर शरण गौड़
निदेशक
प्रौढ़ शिक्षा, उ० प्र०, लखनऊ

दिनांक : दिसम्बर 30, 1988

इस संस्करण के सम्बन्ध में

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन पुस्तिका में उल्लिखित प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की विषय वस्तु के परिप्रेक्ष्य में राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के लिए तैयार की गई प्रवेशिकाओं में यथानुसार संशोधन, परिवर्धन एवं परिवर्तन करना अपरिहार्य हो गया है।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु पठन-पाठन सामग्री का पुनरीक्षण और संशोधन करने के लिए साक्षरता निकेतन में कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इनमें निदेशक, प्रौढ़ शिक्षा, श्री ईश्वर शरण गौड़ के अतिरिक्त अनेक शिक्षाविद् एवं भाषा विशेषज्ञों ने भाग लिया। इन विशेषज्ञों के सहयोग से इस संस्करण में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, नई दिल्ली एवं प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित कार्यशालाओं की संस्तुतियों को समायोजित किया गया है।

इस संस्करण में इस बात का ध्यान रखा गया है कि (अ) इस प्रवेशिका में दी गई सामग्री से 6 महीने के भीतर निरक्षर प्रौढ़ व्यावहारिक साक्षरता प्राप्त कर सकें, (ब) राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के विभिन्न आयामों, जैसे व्यावहारिक दक्षता, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, मनोरंजन, चेतना जागृति, धार्मिक सौहार्द के कतिपय आधारिक पक्षों का परिचय नवसाक्षर को प्राप्त कराया जा सके तथा (स) शिक्षण-प्रशिक्षण के वातावरण को सृजित करने के लिए उपयुक्त सामग्री अनुदेशक के हाथ में उपलब्ध हो सके।

यह सुसंयोग रहा है कि इस प्रवेशिका के पुनरीक्षण एवं संशोधन में प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, भारत सरकार के सलाहकार श्री जी० वी० भक्तप्रिय एवं डा० रामदास, राज्य संदर्भ केन्द्र, जामिया मिलिया, नई दिल्ली के निदेशक श्री मुश्ताक अहमद तथा उनके सहयोगी श्रीमती निशात फारूक ने अपने बहुमूल्य सुझाव दिये। अन्य विशेषज्ञों में डा० एन० के० सिंह, श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी, श्री लीलाधर शर्मा "पर्वतीय", डा० श्यामला कान्त वर्मा तथा डा० टी० आर० सिंह आदि ने अपना-अपना योगदान दिया। साक्षरता निकेतन के पाठ्यक्रम एवं सामग्री निर्माण विभाग के सहयोगियों ने बड़े मनोयोग से इस कार्य को सम्पन्न कराया।

मुझे इस बात का उल्लेख करते हुए बड़ी प्रसन्नता है कि इस प्रवेशिका के संशोधन सम्बन्धी कार्य में हमें हर स्तर पर वर्तमान निदेशक, प्रौढ़ शिक्षा, उ० प्र०, श्री ईश्वर शरण गौड़ का दिशा-निर्देश एवं मार्गदर्शन मिला। एतदर्थ हम उनके अत्यन्त अनुग्रहीत हैं।

आशा है, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के उद्देश्यों की पूर्ति में हमारी यह प्रवेशिका कसौटी पर खरी उतरेगी।

गणेश शंकर चौधरी
निदेशक

दिनांक : दिसम्बर 30, 1988

अनुदेशक बंधुओं से---

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में जो प्रतिभागी आते हैं, उन्हें कई प्रकार के अनुभव हैं। अपने व्यवसाय, समाज, रीति-रिवाज, देश धर्म के विषय में वे बहुत कुछ जानते समझते हैं और उन्हीं के अनुसार आचरण करते हैं। उनमें यदि कोई कमी है तो यही कि वे निरक्षर हैं, पढ़-लिख नहीं सकते। आप में और उनमें जो फर्क है वह भी यही कि आप पढ़ने-लिखने में समर्थ हैं और अब उन्हें पढ़ाने जा रहे हैं।

निरक्षर प्रौढ़ों को सबसे पहले वर्ण ज्ञान कराना है। इस प्रवेशिका में यह ज्ञान उस क्षेत्र की परिचित शब्दावली के आधार पर कराया गया है। इसमें शब्दावली का चयन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये शब्द (क) उनके जीवन परिवेश से सम्बन्धित हों, (ख) उनके जीवन के विविध कार्य क्षेत्रों---कृषि, व्यवसाय, शिल्प, लोक कला, संगीत, संस्कृति आदि से सम्बन्धित हों, (ग) आधुनिक जीवन के विकास की नई दिशाओं से सम्बन्धित हों, जैसे---कृषि के नये साधन (ट्रैक्टर, उर्वरक, ट्यूबवेल, थ्रेशर आदि), ऊर्जा (गोबर गैस, सौर चूल्हा, पवन चक्की आदि), परिवार कल्याण (जच्चा-बच्चा, पोषण, टीका आदि) और विकास योजनाएं।

इन शब्दों के आधार पर वर्ण ज्ञान कराने का मूल उद्देश्य यह है कि (1) प्रौढ़ आज की सामाजिक समस्याओं तथा विकास के नये-नये साधनों से परिचित हो सकें, (2) उनकी व्यावसायिक कार्य कुशलता में वृद्धि हो, तथा (3) अपनी गिरी हालत में सुधार ला सकें। वस्तुतः साक्षरता कार्यक्रम में ये चारों बातें निहित हैं---साक्षरता, सामाजिक चेतना, व्यावसायिक दक्षता और राष्ट्रीय मूल्य।

प्रौढ़ शिक्षा कार्य में आपको केन्द्र पर 2 घंटे का समय दिया जाता है। इस समय की एक समय सारिणी भी आपने बनाई होगी। प्रति दिन केन्द्र पर जो कार्यकलाप आयोजित किये जाने हैं उसका समय विभाजन समय सारिणी में दिया होगा। इसके अनुसार आप केन्द्र के क्रियाकलाप आयोजित करेंगे।

आपको प्रतिभागियों के लिए प्रवेशिका, स्लेट, पेंसिल और अभ्यास पुस्तिकाएं जो दी गई हैं, उन्हें कृपया बाँट दें। आपके काम में सहायता करने के लिए प्रवेशिका, शिक्षण चार्ट, फ्लिप चार्ट, विषय परिचय पत्रियाँ, पोस्टर्स और मूल्यांकन के लिए सामग्री दी गई है।

आप यह ध्यान रखें कि पहले दिन के पढ़ाने की प्रक्रिया उसके बाद के दिनों की प्रक्रिया से भिन्न होगी। परन्तु फिर भी एक सामान्य स्थिति यह रहे कि सामूहिक प्रार्थना करने के बाद जो पाठ आप पढ़ाने जा रहे हैं, उसके पहले के पाठों पर आप दो-चार प्रश्न प्रतिभागियों से करें। उनका उत्तर प्राप्त होने पर जो पाठ आप पढ़ाने जा रहे हैं, उस पर चर्चा प्रारम्भ करें। शिक्षण चार्ट के पीछे पाठ पर चर्चा करने के लिए कुछ प्रश्न और सामग्री दी हुई है। इसे पढ़ कर आयें। उनसे प्रश्न पूछें और उस सामग्री को धीरे-धीरे कक्षा में भी पढ़ें। प्रश्न पूछने तथा चर्चा करने का तरीका नीचे दिया गया है---

चर्चा

शिक्षण चार्ट तथा प्रवेशिका में दिये चित्र पर चर्चा करते समय आप इस बात का विशेष ध्यान रखें कि चर्चा में प्रौढ़ प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी हो, अर्थात् वे अपनी बात खुल कर कह सकें। आपकी सफलता इस बात में है कि आप स्वयं कम बोलें और प्रौढ़ों को अधिक से अधिक बोलने का अवसर दें। साथ ही यह भी ध्यान रखें कि प्रौढ़ जो बात कहते हैं, यदि उसमें कुछ जोड़ने की आवश्यकता है तो उसे अपनी ओर से जोड़ दें। प्रौढ़ यदि विषय से बाहर चर्चा करने लगें तो उन्हें सावधानी से मूल विषय पर ले आयें। यह ध्यान रखें कि आपकी किसी बात से प्रौढ़ों के सम्मान पर आँच न आये और वे चर्चा से सही निर्णय पर पहुँच सकें। संक्षेप में—

(1) चित्र में जो कुछ दिखाई दे रहा है, उस पर प्रश्न करें।

(2) चित्र में जो चीजें दिखाई गई हैं, उनमें कुछ को प्रौढ़ पहचानते होंगे। जिन्हें वे पहचानते हैं, उनके बारे में पहले उनसे प्रश्न करें। जिन्हें वे नहीं पहचानते, उनके बारे में उनको जानकारी दें।

(3) चर्चा में हर एक प्रौढ़ प्रतिभागी को बोलने का अवसर दें। सभी को अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहित करें। आपकी सफलता की एक बड़ी कसौटी यह है कि प्रौढ़ों का मौन टूटे और वे सामूहिक चर्चा में खुल कर भाग लें।

(4) चर्चा करते समय विषय बोध और ग्राह्यता की दृष्टि से यदि आवश्यक हो तो उस बोली में प्रश्न करें जिस बोली को प्रौढ़ प्रायः इस्तेमाल करते हैं। जैसे पूर्वी क्षेत्र में "चावल" शब्द का अर्थ कच्चे चावल से है तथा "भात" पके हुए चावल को कहते हैं।

(5) चर्चा में प्रतिभागियों को पाठ के विषय की पूरी जानकारी दें। इससे वे विषय को अच्छी तरह से समझ सकेंगे।

चित्र के आधार पर चर्चा पूरी हो जाने पर उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाना आरम्भ करें।

साक्षरता शिक्षण

साक्षरता शिक्षण में तीन बातें शामिल हैं—पढ़ना, लिखना और आरम्भिक गणित का ज्ञान देना। प्रवेशिका द्वारा वर्ण, मात्रा, संयुक्ताक्षरों तथा अंकों का ज्ञान कराया गया है। इनके ज्ञान के बाद प्रौढ़ शब्द और वाक्य पढ़ना सीख जायेंगे, अभ्यासों द्वारा प्रौढ़ लिखने का कौशल प्राप्त करेंगे तथा इन्हीं से वे गणित का भी ज्ञान प्राप्त करेंगे। साक्षरता शिक्षण देते समय अनुदेशक द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया का क्रम इस प्रकार होगा :—

(क) पढ़ना सिखाना

वर्ण : पाठ में दिये गए चित्र को देखकर प्रौढ़ उस विषय को समझ लेंगे। विषय का नाम प्रौढ़ों

द्वारा स्वयं निकलवाया जाय। आप देखेंगे कि यह नाम उस पाठ के वर्ण से सम्बन्धित होगा। जैसे, पहले पाठ में अरहर के फलते खेत का चित्र है। प्रौढ़ उसे देखकर कहेगा––यह अरहर के पौधे हैं। तब आप उसे बताएंगे कि अरहर शब्द का पहला अक्षर 'अ' है। चर्चा के बाद आप उन्हें वर्ण-ज्ञान कराएंगे और वर्ण पहचानने के लिए चित्र का पुनः प्रयोग करेंगे। हर चित्र की विषय-वस्तु के नाम को पाठ में सिखाए जाने वाले वर्ण से जोड़ेंगे।

1. नया पाठ पढ़ाते समय उसमें आये नए वर्णों और मात्राओं को ही श्याम पट पर लिखें, पहले सिखाए हुए वर्णों और मात्राओं को नहीं।
2. सीखे हुए वर्णों और मात्राओं से बनने वाले अन्य शब्दों को श्याम पट पर लिखें और उन्हें पढ़ना सिखाएं।
3. हर प्रौढ़ से अपनी किताब में प्रत्येक वर्ण या मात्रा के सामने लिखे शब्दों में से उस वर्ण के नीचे उँगली रख कर पहचान करवाएं।
4. जब प्रौढ़ इन वर्णों और मात्राओं से अच्छी तरह परिचित हो जायँ तब उनसे पाठ में दिये गए शब्दों तथा वाक्यों को भी पढ़वाएं। ध्यान रखें कि वे शुद्ध उच्चारण के साथ ही पढ़ें।
5. पाठ के अंत में दी गई पठन सामग्री को अनुदेशक पहले स्वयं पढ़ कर सुनाएं। उसके बाद प्रौढ़ों से उसे पढ़वाएं। संभव है प्रौढ़ पूरी सामग्री एक बार में न पढ़ सकें, इसलिए उनसे पहले थोड़ी-थोड़ी सामग्री पढ़वाएं। फिर पूरा अभ्यास पढ़वाएं। पढ़ने का मौका हर एक को दें। प्रवेशिका समाप्त करने पर प्रौढ़ को पढ़ने सम्बन्धी निम्नलिखित दक्षताएं आनी चाहिए––

   (1) शिक्षार्थियों की रुचि के विषय पर लिखे किसी आसान पैरे को सही तरीके से 30 शब्द प्रति मिनट की गति से बोल कर पढ़ना।

   (2) सरल भाषा में लिखे छोटे पैरे को 35 शब्द प्रति मिनट की गति से चुपचाप पढ़ना।

   (3) रास्ते के संकेतों, इश्तिहारों, सरल हिदायतों तथा नव-साक्षरों के लिए छपे समाचार-पत्रों आदि को समझ कर पढ़ना।

   (4) अपने काम-काज और रहन-सहन के सम्बन्ध में सरल रूप से लिखे संदेशों को समझने की योग्यता।

(ख) लिखना सिखाना

(1) लिखना सिखाने के लिए प्रवेशिका के प्रत्येक पाठ के साथ अभ्यास दिये गए हैं। उन अभ्यासों को कैसे पूरा किया जाय, इसके लिए अभ्यासों के साथ ही आवश्यक निर्देश दिये गए हैं, उनको पढ़ लें।

(2) प्रवेशिका का पहला पाठ पढ़ाने के बाद लिखना सिखाने का अभ्यास भी साथ ही साथ कराना है। यही विधि सब पाठों के साथ अपनानी है।

(3) लिखना सिखाने के लिए सबसे पहले प्रवेशिका में दिये गए अक्षरों पर क्रम से उँगली फेरने का अभ्यास कराएं, फिर स्लेट पर लिखना सिखाएं। जब स्लेट पर लिखने का अभ्यास हो जाय तो उसके बाद पेंसिल से पुस्तक में दिये गए अभ्यासों को पूरा कराएं।

(4) वर्ण की बनावट के क्रम को ध्यान में रखते हुए वर्ण के अलग-अलग घुमाव (स्ट्रोक) हर एक पाठ में दिये गए हैं। इससे लिखना सिखाना आसान रहेगा। आप उन घुमावों को श्याम पट पर लिख कर प्रौढ़ों से स्लेट पर लिखने का अभ्यास कराएं। उसके बाद प्रवेशिका के पाठों में दिये गए अभ्यास कराएं।

(ग) इमला सिखाना

(1) जब प्रौढ़ थोड़ा-थोड़ा लिखना सीख जायँ तो उन्हें सीखे हुए वर्णों तथा मात्राओं को ध्यान में रख कर इमला बोलें। देख-देख कर लिखने तथा बोल कर इमला लिखने का अभ्यास प्रति दिन कराएं।

(2) जितना कुछ प्रवेशिका या अभ्यासों में दिया गया है, लिखाई-पढ़ाई में उतना ही पर्याप्त नहीं है। अलग से भी शब्द और वाक्य लिखाएं। उनके व्यवहार में आने वाली चीजें लिखवाएं।

(3) साफ-सुथरी लिखावट पर विशेष ध्यान दें। लिखने की गति पर बराबर ध्यान रखें। लिखने सम्बन्धी ये योग्यताएं होनी चाहिए——

(अ) सात शब्द प्रति मिनट की गति से समझ कर नकल करना।

(ब) पाँच शब्द प्रति मिनट की गति से सुने हुए को लिखना।

(स) ठीक-ठीक दूरी पर तथा सीधी पंक्ति में लिखना।

(द) रोजमर्रा के प्रयोग में आने वाले फार्म, छोटे पत्र तथा आवेदन पत्र अपने-आप लिखना।

(घ) गणित सिखाना

आपने यह देखा होगा कि प्रौढ़ को थोड़ा-बहुत गिनना आता है, पर वह अपनी गिनती को लिख नहीं सकता तथा अंक सम्बन्धी अपनी समस्याओं को लिख कर हल नहीं कर सकता है। इस प्रवेशिका में पहले पाठ से गिनतियाँ लिखी गई हैं। यह उद्देश्य है कि आप उस पाठ पर चर्चा करने, पढ़ना-लिखना सिखाने के बाद गिनती को पहचानना तथा लिखना भी सिखाएं।

(1) पहले पाठ से गिनती प्रारम्भ करके, आगे धीरे-धीरे गिनतियों की संख्या बढ़ा दी गई है। गिनती सिखाने में भी यही क्रम अपनाएं, जो पढ़ना-लिखना सिखाने में आपने किया है। अर्थात् पहले पढ़ना या पहचानना सिखाएं, फिर लिखना।

(2) चित्रों में वस्तुओं को गिन कर उनके सामने गिनती लिखना सिखाएं। गणित सिखाने के अभ्यास प्रवेशिका में दिये गए हैं। उसमें दिये गए निर्देशों के अनुसार गणित सिखाएं।

(3) प्रवेशिका समाप्त होने पर एक प्रतिभागी में गणित सम्बन्धी निम्नलिखित दक्षताएं आनी चाहिए :

(अ) 1 से 100 अंकों का पढ़ना तथा लिखना।

(ब) छोटे-मोटे हिसाब करना, जिसमें जोड़ और घटाना तीन अंकों से ज्यादा के न हों और गुणा व भाग दो अंकों से ज्यादा के न हों।

(स) भार, नाप-तौल, रुपये-पैसे, दूरी तथा क्षेत्रफल की मीट्रिक इकाइयों तथा समय की इकाइयों का काम चलने लायक ज्ञान होना।

(द) अनुपात तथा ब्याज की साधारण जानकारी तथा उनका अपने काम-काज और रहन-सहन में प्रयोग। इनमें भिन्न वाली संख्याएं न हों।

नई राह प्रवेशिका

(पाठ इकाई विवरणिका)

पाठ संख्या	वर्ण/मात्राएं	गणित	राष्ट्रीय साक्षरता मिशन में इंगित प्रेरणादायी कार्यक्रम	विषय एवं चर्चा बिन्दु
1	2	3	4	5
1.	अ आ	1 की गिनती	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप	कृषि बागवानी : अरहर और आम की खेती, किस्में, उपयोगिता
2.	इ ई	2 से 3 तक गिनती	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप	कृषि बागवानी : इमली की उपयोगिता, इमली के पेड़ का महत्त्व, ईख की उपयोगिता, पैदावार, चीनी, गुड़, सिरका आदि उद्योगों की जानकारी
3.	उ ऊ ऋ	4 से 5 तक गिनती	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप	कृषि उद्योग : उपज कैसे बढ़ाएं, ऊसर सुधार, ऊन उद्योग
4.	ए ऐ	6 से 10 तक गिनती	राष्ट्रीय मूल्य, स्वास्थ्य से सम्बन्धित, चेतना जागृति	राष्ट्रीय एकता, स्वास्थ्य : एकता का महत्त्व, आँखों के रोग, आँखों की सुरक्षा
5.	ओ औ	1 से 10 तक गिनती का अभ्यास	स्वास्थ्य एवं महिला कल्याण, चेतना जागृति	अंधविश्वास, नारी शक्ति : समाज में फैले अंधविश्वास, अंध-विश्वास से हानियाँ, नारी जागरण, नारी का सामाजिक महत्त्व
6.	अं अः	11 से 20 तक गिनती इकाई दहाई का ज्ञान	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप, चेतना जागृति	मुर्गी पालन : मुर्गी पालन की जानकारी, अंडा उद्योग
7.	क ख	21 से 30 तक गिनती	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप	उद्योग : करघा उद्योग, सूत की कताई, खराद का काम, बढ़ईगीरी की जानकारी, महत्त्व

1	2	3	4	5
8.	ग घ	31 से 50 तक गिनती 1 से 50 तक की गिनतियों का अभ्यास	कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप, चेतना जागृति, राष्ट्रीय मूल्य	कुम्हार उद्योग, मिट्टी के बर्तन बनाना, आदर्श घर, आँगनबाड़ी, छोटा परिवार
9.	आ ा	51 से 70 तक गिनती	चेतना जागृति	सामाजिक ज्ञान, बड़ों से व्यवहार
10.	च छ	71 से 100 तक गिनती	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप, चेतना जागृति	पशु पालन, मधुमक्खी पालन : पशुओं के लिए हरा चारा, चरागाह, शहद की उपयोगिता, मौन पालन
11.	ज झ ञ	100 तक गिनतियों का अभ्यास	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप, चेतना जागृति	कृषि : जई की खेती, जई की उपयोगिता, प्रकृति और झरने की उपयोगिता
12.	इ ि ई ी	100 तक की गिनतियों का अभ्यास	चेतना जागृति, राष्ट्रीय मूल्य	आदर्श परिवार : पारिवारिक सम्बन्ध, अतिथि सत्कार
13.	ट ठ ड	इकाई, दहाई, सैंकड़े का ज्ञान	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप	कृषि, गृह उद्योग : टमाटर की खेती, टमाटर की उपयोगिता, डलिया और बर्तन बनाना, गृह उद्योग के लिए बैंकों से ऋण
14.	ढ ण ड़ ढ़	इकाई, दहाई, सैंकड़े का अभ्यास	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप, चेतना जागृति	रोजगार : आई० आर० डी० योजना और ट्राइसम योजना की जानकारी, बैंकों से ऋण की सुविधाएं
15.	त थ	एक और दो अंकों के साधारण जोड़	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप, चेतना जागृति	हथकरघा उद्योग तथा डेयरी उद्योग, खादी ग्रामोद्योग की जानकारी, दुधारू पशुओं की नस्ल सुधार, बैंकों से ऋण की सुविधाएं
16.	द ध न	एक अंक का घटाना	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप, चेतना जागृति, मन बहलाव के कार्यक्रम	सिलाई-कढ़ाई, दर्जीगीरी का धंधा, धनुष-बाण का महत्त्व, मेले और मनोरंजन

1	2	3	4	5
17.	उ ु ऊ ू	तोल का ज्ञान एक अंक का गुणा	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप, चेतना जागृति, राष्ट्रीय मूल्य	घरेलू कार्य, आपसी सद्भाव, एकता का महत्त्व
18.	प फ ब	एक अंक के भाग	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप, चेतना जागृति	कृषि, पशुपालन : फलों की खेती, पपीते का उत्पादन, पपीते की उपयोगिता, बकरी पालन का महत्त्व, उनकी बीमारियाँ और बचाव
19.	भ म	रुपए पैसे का ज्ञान तथा रुपए पैसे के जोड़	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप, चेतना जागृति	उद्योग : ईंट भट्ठा उद्योग की जानकारी, मजदूरों की स्थिति, मजदूरों को मिलने वाली सुविधाएं
20.	ए े ऐ ै	रुपए पैसे के घटाने का ज्ञान	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप, चेतना जागृति, राष्ट्रीय एवं सामाजिक मूल्य	कृषि, आपसी सहयोग : कृषि कार्यों में आपसी सहयोग का महत्त्व, सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता
21.	य र	तोल की जानकारी	कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप, महिला शिशु कल्याण, चेतना जागृति, राष्ट्रीय मूल्य	कृष्ण कथा, बच्चों का लालन-पालन, गोपालन का महत्त्व, बायोगैस संयंत्र, राखी त्योहार का सामाजिक महत्त्व
22.	अभ्यास पाठ (कविता)	लम्बाई की नाप	चेतना जागृति, राष्ट्रीय मूल्य	राष्ट्रीय एकता, देश प्रेम
23.	ल व श	द्रव पदार्थों की नाप	कार्यात्मक शिक्षा, कौशल विकास, आर्थिक कार्यकलाप, चेतना जागृति	बागवानी, पर्यावरण : फल उद्योग, शरीफे की खेती, महत्त्व, उपयोगिता, वनों का महत्त्व, पर्यावरण सुधार, वन संरक्षण
24.	ओ ो औ ौ	जोड़, घटाने और गुणा का अभ्यास	चेतना जागृति, राष्ट्रीय मूल्य	परिवार कल्याण : बढ़ती जनसंख्या के दुष्परिणाम, छोटे परिवार का महत्त्व, बढ़ती जनसंख्या को रोकने के उपाय

1	2	3	4	5
25.	ष स ह	प्रतिशत और ब्याज का ज्ञान	चेतना जागृति, राष्ट्रीय मूल्य, महिला कल्याण, साक्षरता, वैज्ञानिक प्रगति	सुधार समिति का महत्त्व, सभा की कार्यवाही, समय से शादी, समय से बच्चा, साक्षरता का महत्त्व, वैज्ञानिक प्रगति, हवाई जहाज की उपयोगिता
26.	अं ं ँ अः ः	घड़ी देखना, समय का ज्ञान	स्वास्थ्य, चेतना जागृति	हरे सागों का महत्त्व, बचत का महत्त्व, बच्चों के टीके
27.	क्ष त्र ज्ञ	अनुपात का ज्ञान	साक्षरता, चेतना जागृति, धार्मिक प्रवचनों तथा भजनों से जुड़े कार्यक्रम	साक्षरता : साक्षरता का महत्त्व, निरक्षरता से हानियाँ, पत्र लेखन, कबीर का जीवन और उपदेश
28.	संयुक्ताक्षर (पाई वाले)	— —	स्वास्थ्य से सम्बन्धित, चेतना जागृति	स्वास्थ्य सफाई : संतुलित भोजन का महत्त्व, पोषक तत्त्व, घर, पास-पड़ोस तथा शरीर की सफाई का महत्त्व
29.	संयुक्ताक्षर (घुंडी वाले) ्र का प्रयोग	— —	मन बहलाव, सांस्कृतिक कार्यकलाप, स्वास्थ्य, चेतना जागृति	राधा कृष्ण लीला, अच्छे स्वास्थ्य के लिए जरूरी बातें
30.	अभ्यास पाठ (कविता)	— —	चेतना जागृति, राष्ट्रीय मूल्य	जनसंख्या शिक्षा : बढ़ती जनसंख्या के दुष्परिणाम, नियोजित परिवार का महत्त्व, जनसंख्या रोकने के उपाय
31.	संयुक्ताक्षर (हलन्त वाले)	— —	चेतना जागृति, राष्ट्रीय मूल्य	जनसंख्या शिक्षा : बढ़ती जनसंख्या के दुष्परिणाम, उसे रोकने के उपाय
32.	अभ्यास पाठ	— —	चेतना जागृति	देश की भौगोलिक जानकारी

पाठ 1

अरहर
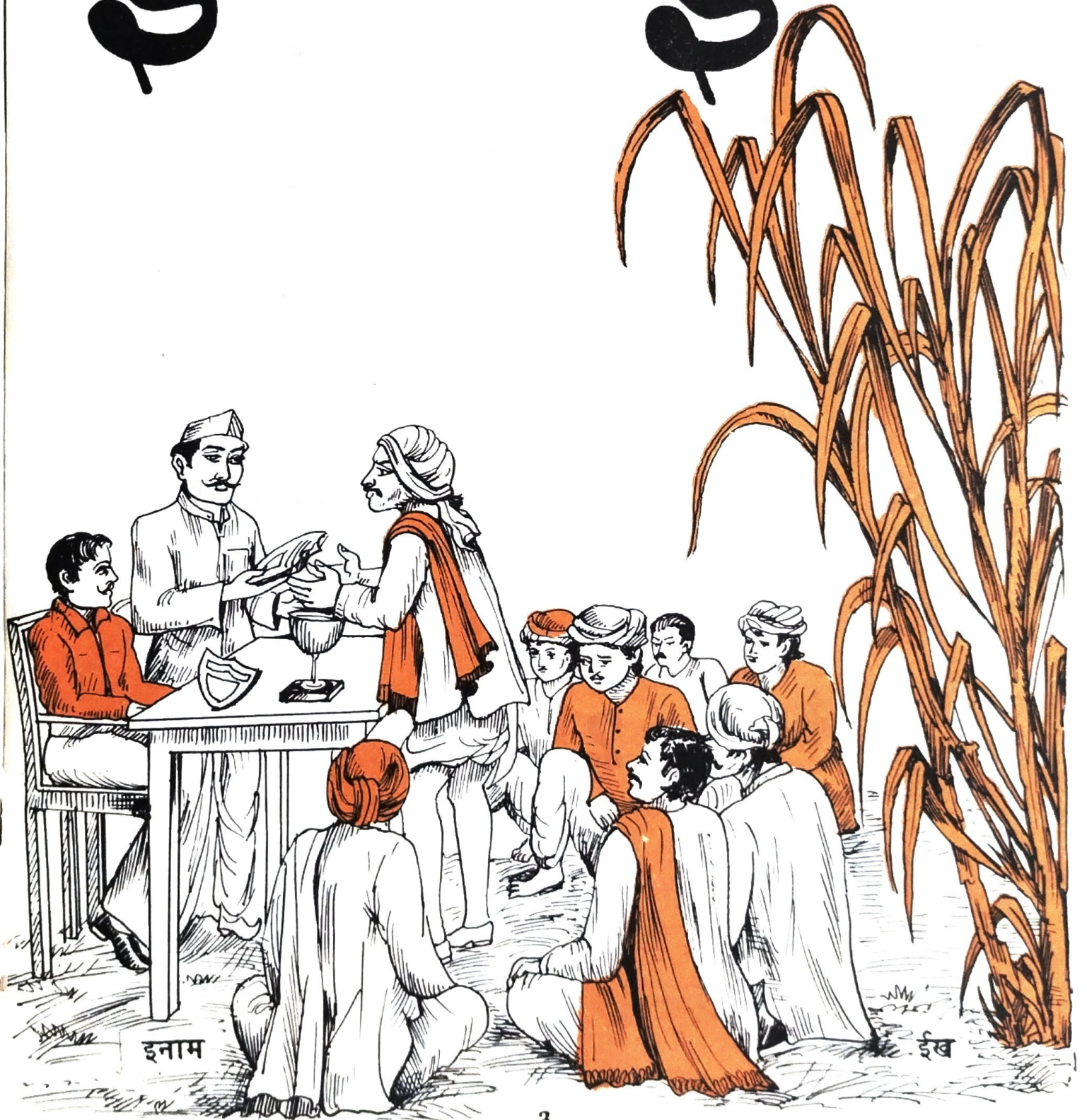
आ

आम

1. लिखिए :

आ

2. गिनिए और लिखिए :

इ ई

1. पढ़िए श्रौर लिखिए :

2. गिनिए श्रौर लिखिए :

2

3

पाठ 3

उपजाऊ

ऊसर

ऋ

1. लिखिए :

उ

ऊ

ऋ

2. गिनिए और लिखिए :

5 5 ....

पाठ 4

ए

एकता

ऐ

ऐनक
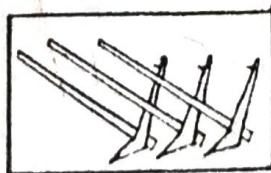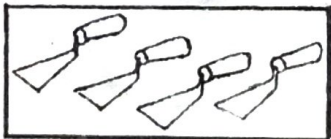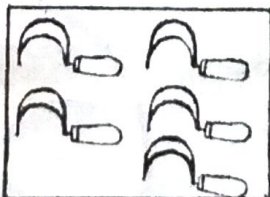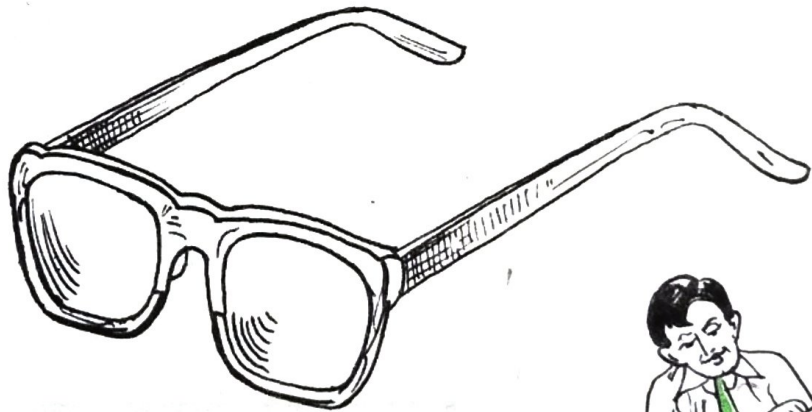
1. पढ़िए :

उ ऊ ऋ ए ऐ

ऐ उ ए ऊ ऋ

2. लिखिए :

ए

ऐ

आए

आइए

3. खाली जगह में आ, ए, इ या ई वर्ण लिखकर शब्द पूरे कीजिए, उन्हें लिखिए और पढ़िए :

आ·· आ··ए ···इए आइ··

4. गिनिए और लिखिए :

9

10

पाठ 5

ओ औ

ओझा

औरत
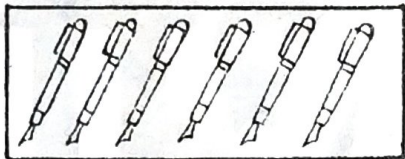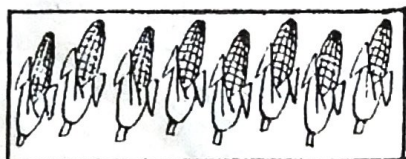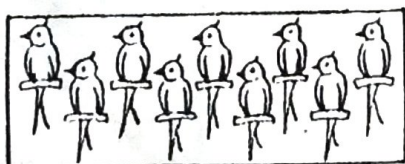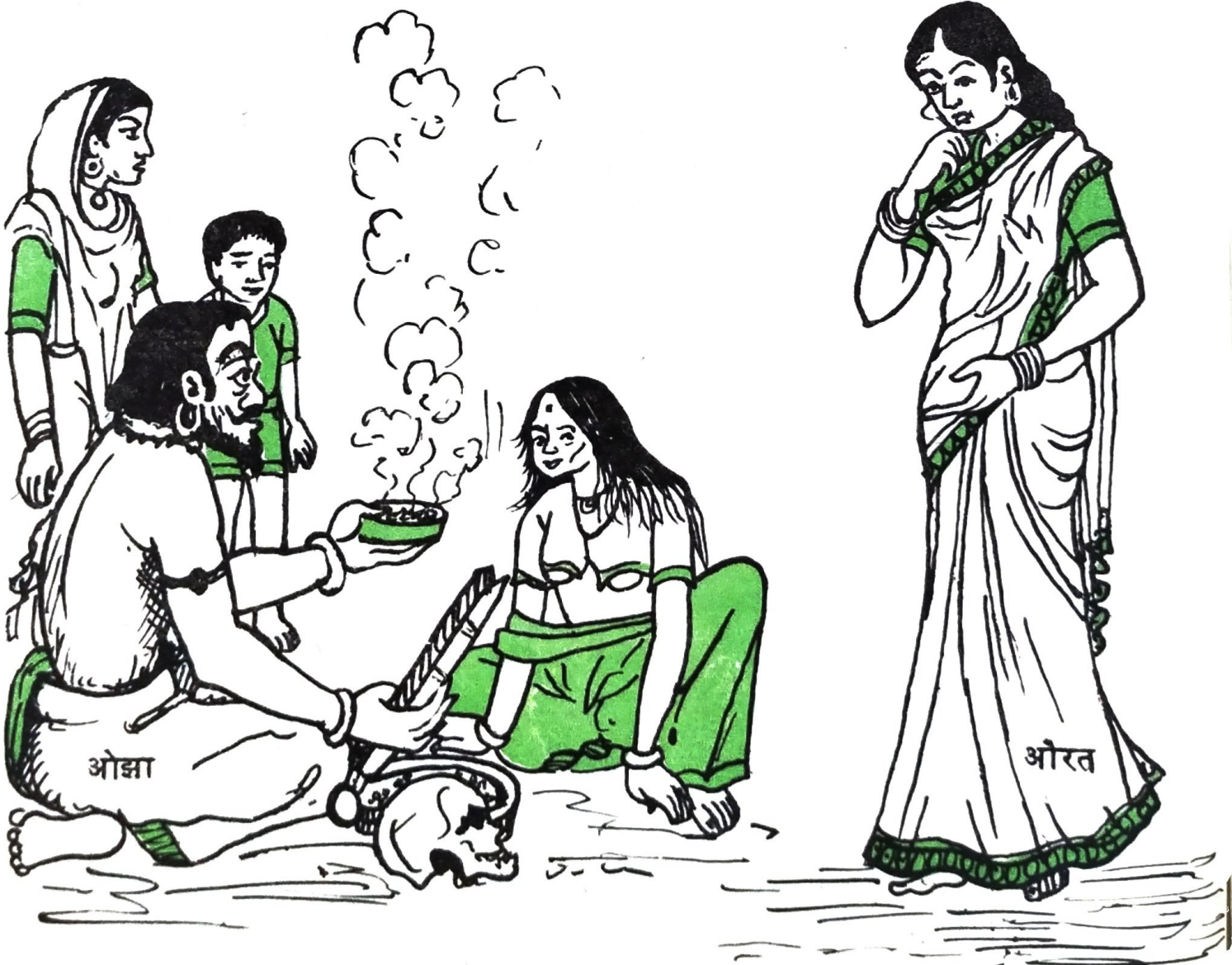
1. लिखिए :

ओ ____________________

औ ____________________

ओ आओ ____________________

आए आए ____________________

2. नीचे लिखे वर्णों में से छाँटकर शब्द पूरे कीजिए और लिखिए :

ओ औ ऐ ए ऊ उ ई इ आ अ

आ— —इए —इ— —ई —ओ

____

____

3.1. चौखटे में बने चित्रों को गिनिए और सामने खाली जगह में संख्या लिखिए :

○ ○ ○ ...... ○ ○ ○ ○ ○ ......
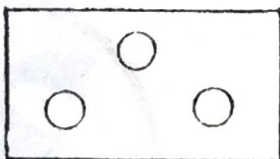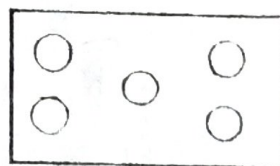
3.2. खाली जगहें भरकर गिनती पूरी कीजिए :

1 ... 3 ... 5 ... 7 ... 9 ...

3.3. 1 से 9 तक गिनतियाँ क्रम से लिखिए :

... ...

3.4. 9 से 1 तक उल्टे क्रम में गिनतियाँ लिखिए :

... ...

पाठ 6
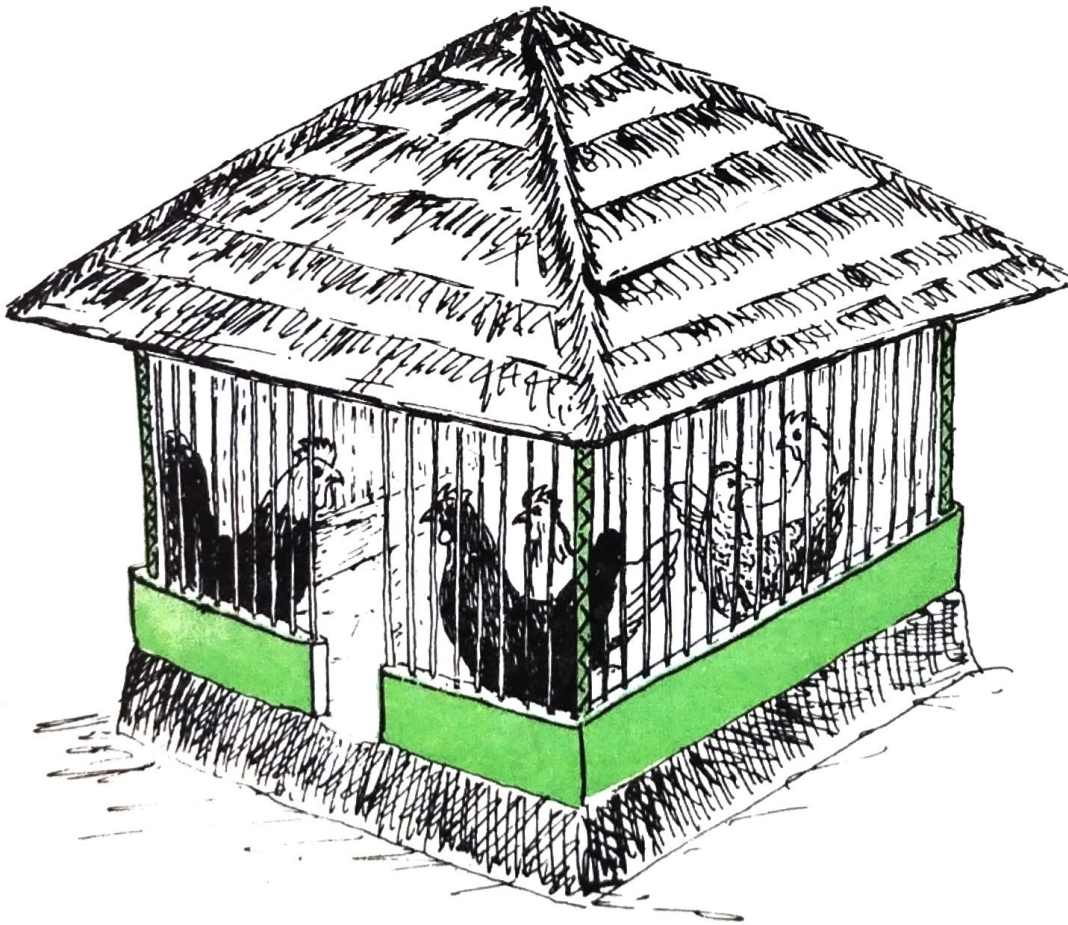
अं

ओ औ अं अः

औ अः ओ अं

आओ आओ आई ।

आइए आइए आए ।

1. लिखिए :

अं ______ ______ ______ ______ ______

अः ______ ______ ______ ______ ______

आओ आओ, आई ।

____

आइए आइए आए ।

____

2. नीचे चौखटे में लिखे वर्ण पढ़िए। हर वर्ण को नीचे खाली चौखटे में लिखिए

अ ई आ आ उ ओ ऊ ए ऐ ओ उ औ
उ आ ई इ इ ऊ अं अ उ ए ओ औ इ अ
ई ओ ई आ ऐ उ ऐ ए अं अः ऋ ओ औ आ

3.1. 11 से 20 तक की गिनती सीखिए :

11	12	13	14	15
16	17	18	19	20

3.2. समझिए :

10 + 1 = 11

3.3. दहाई-इकाई सीखिए :

दहाई	इकाई		दहाई	इकाई	
1	1		1	6	
↓	↓		↓	↓	
$10 +$	1	$= 11 \cdots\cdots$	$10 +$	6	$= 16 \cdots\cdots$
1	2		1	7	
↓	↓		↓	↓	
$10 +$	2	$= 12 \cdots\cdots$	$10 +$	7	$= 17 \cdots\cdots$
1	3		1	8	
↓	↓		↓	↓	
$10 +$	3	$= 13 \cdots\cdots$	$10 +$	8	$= 18 \cdots\cdots$
1	4		1	9	
↓	↓		↓	↓	
$10 +$	4	$= 14 \cdots\cdots$	$10 +$	9	$= 19 \cdots\cdots$
1	5		2	0	
↓	↓		↓	↓	
$10 +$	5	$= 15 \cdots\cdots$	$20 +$	0	$= 20 \cdots\cdots$

पाठ 7

आक अंक एक कई ओक ईख

आक कई । ईख कई । अंक एक ।

1. लिखिए :

क—— ___ ___ ___ ___

ख—— ___ ___ ___ ___

2. क और ख वर्ण जोड़कर शब्द पूरे कीजिए :

ई—— अं—— ——ई आ—— ए——

3.1. 21 से 30 तक की गिनती सीखिए :

20+1	=21	20+6	=26
20+2	=22	20+7	=27
20+3	=23	20+8	=28
20+4	=24	20+9	=29
20+5	=25	20+10	=30

सही गिनती भरिए :

21 22 ... 24 25 ... 27 28 ... 30

3.3. 30 से 21 तक उल्टी गिनती लिखिए :

... ...

पाठ 8

ग

घ

घर

ङ

आम अंग खग गई

आइए । ईख उग आई ।

आए आए ।

1. लिखिए :

ग

घ

ङ

2. तीन बार लिखिए :

ग

घ

ङ

3. नीचे लिखे वर्णों से कोई पाँच शब्द बनाइए और उन्हें दो-दो बार लिखिए :

ग ख अं ई ए क आ

आग ....

....

4. चित्र देखकर उनके नाम लिखिए :
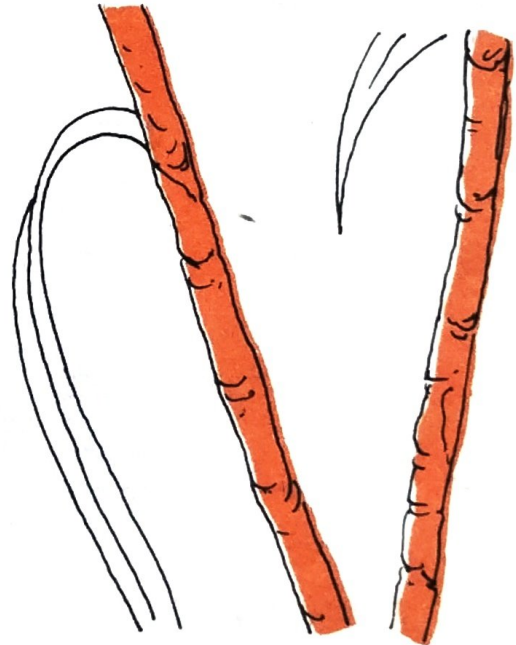
5.1. 31 से 50 तक की गिनती सीखिए :

31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
41	42	43	44	45	46	47	48	49	50

5.2. 1 से 50 तक गिनती क्रम से लिखिए :

जैसे—

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
11	…	…	…	…	…	…	…	…	…
21	…	…	…	…	…	…	…	…	…
31	…	…	…	…	…	…	…	…	…
41	…	…	…	…	…	…	…	…	…

5.3. नीचे के चौखटे में छूटी हुई गिनतियाँ लिखिए :

1	2		4		6	7		9	10
	12	13		15		17	18	19	
21		23	24		26		28		30
31	32		34	35		37		39	40
	42	43		45	46		48		50

पाठ 9

आ ा

ा का खा गा घा

काका खाका खाक

खाओ गाओ घाघ

काई खाई इकाई

एका एकाएक उगाई

आइए काका आइए, खाइए

1. वर्णों में ा की मात्रा लगाइए, लिखिए और पढ़िए :

क का ____________

ख ____________

ग ____________

घ ____________

2. नीचे लिखे शब्दों को दो-दो बार लिखिए :

काई घाघ इकाई एकाएक

______ ______ ______ ______

______ ______ ______ ______

3. नीचे लिखे शब्दों से वाक्य पूरे कीजिए और लिखिए :

काका ईख आओ उग

काका ______ ______ खाओ

______ आ गए ईख ______ आई

____

____

4.1. 51 से 70 तक की गिनती सीखिए :

51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70

4.2. लिखिए :

51	...	...	...	...	...	...	...	...	...
61	...	...	...	...	...	...	...	...	...

4.3. खाली जगहों में सही गिनती भरिए :

	52			55
56		58		
	62		64	
66				70

पाठ 10

च

छ

छत्ता
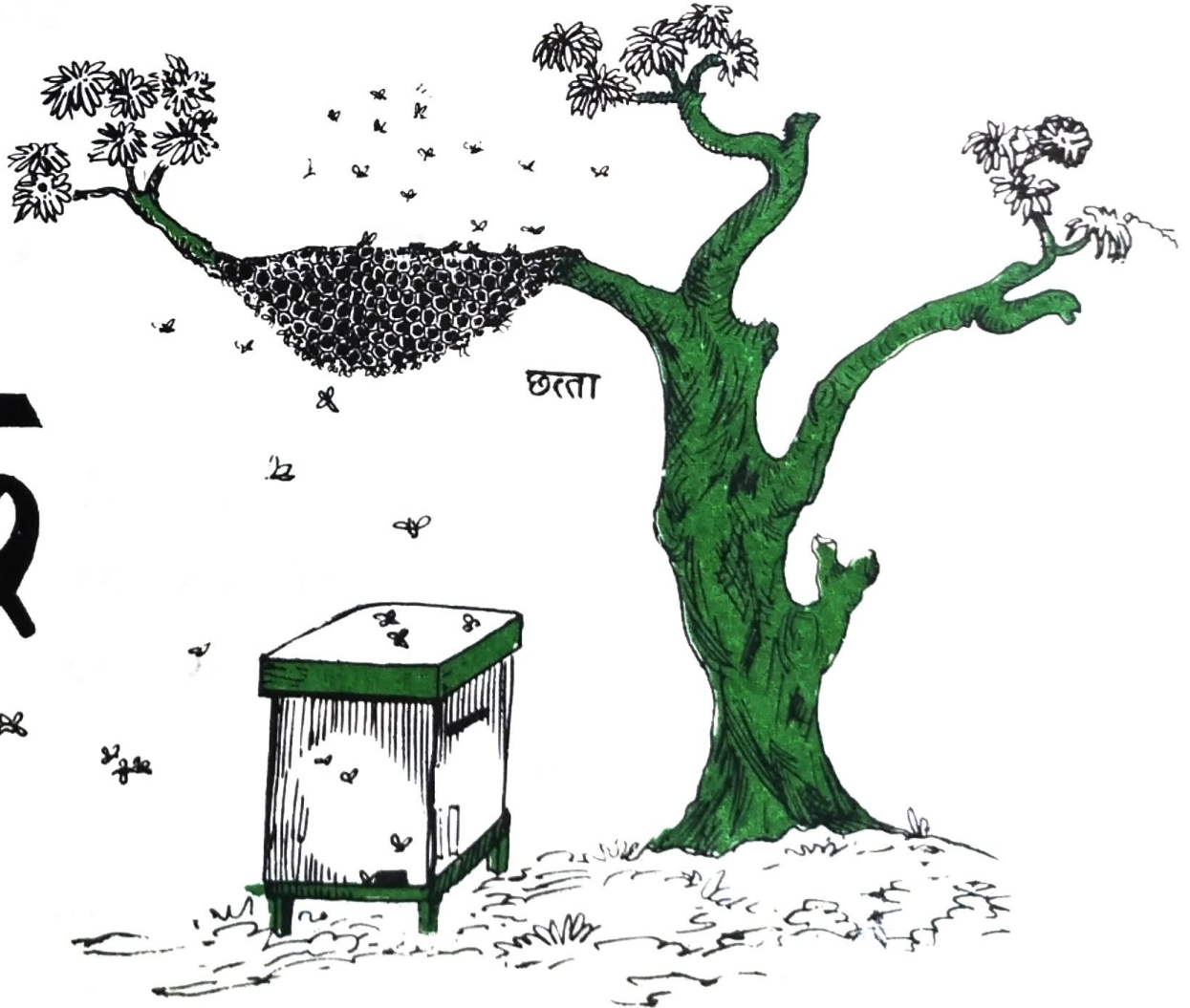
चक	चख	चाचा	छाछ
चाक	खचाखच	छक	चकई

चाचा का चाक।
चाचा चाचा, छाछ।
चाचा खाओ।

1.1. पढ़िए :

71	72	73	74	75	76	77	78	79	80
81	82	83	84	85	86	87	88	89	90
91	92	93	94	95	96	97	98	99	100

1.2. 71 से 100 तक की गिनती लिखिए :

... ...

... ...

... ...

पाठ 11

ज झ

अज गज जग आज काज

खाज झाग झाऊ ओझा जई

जज कागज झक्क ओज जाइए

काका का चक ।

ईख उगाओ ।

ईख उग आई ।

जई उगाओ ।

जई उग आई ।

एकाएक चाचा आए ।

आइए, आइए, चाचा आइए ।
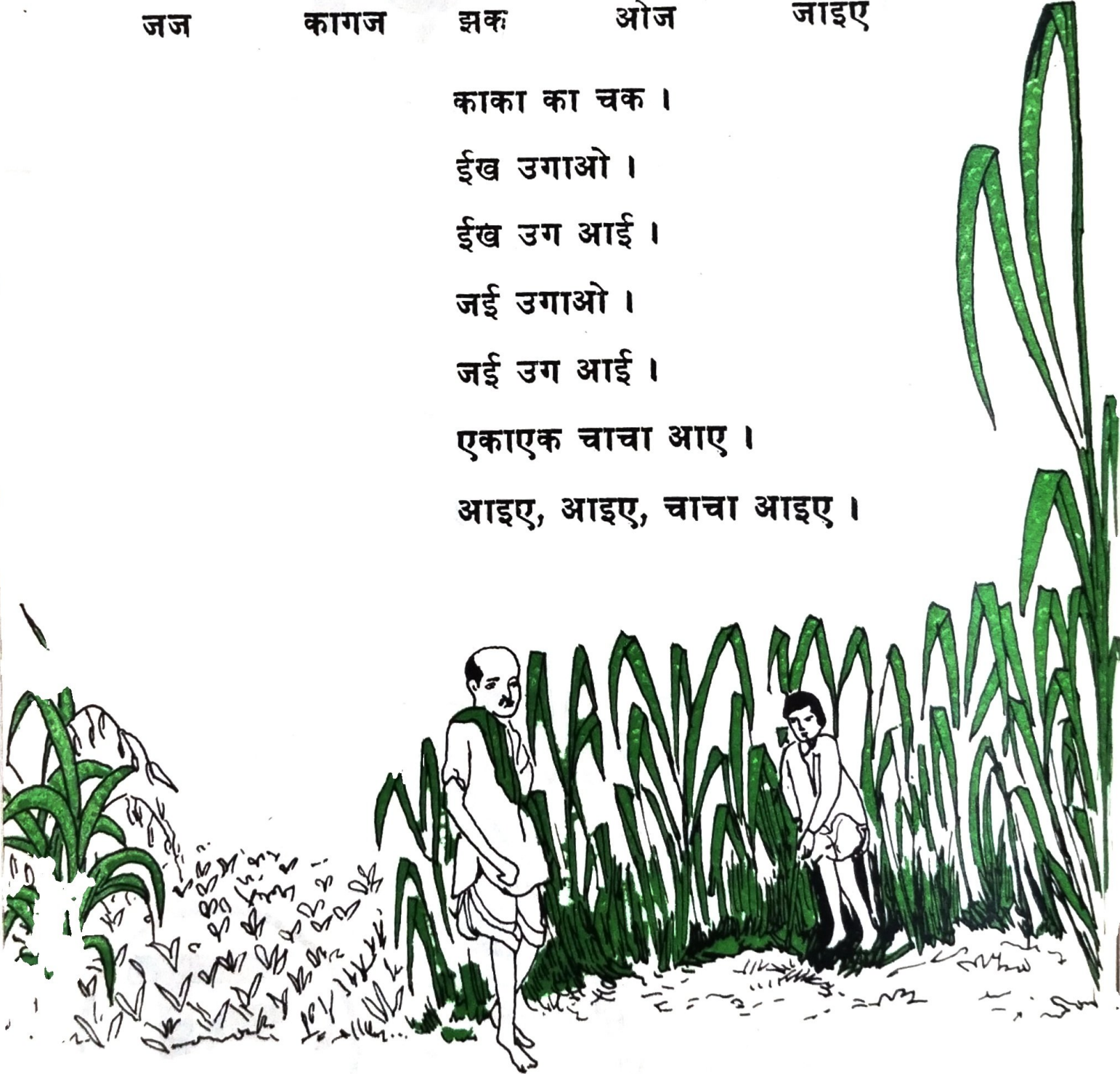
1. लिखिए :

ज ______

झ ______

2. नकल कीजिए :

काका का चक ______

जई उगाओ ______

जई उग आई ______

एकाएक चाचा आए ______

आइए, चाचा आइए ______

3.1. 91 से 100 तक लिखिए :

... ...

... ...

3.2.

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

पाठ 12

इ

ई

ि कि खि गि घि चि छि जि झि

ी की खी गी घी ची छी जी झी

चिक झिझक झिकझिक चिकचिक

काकी चाची जीजी जीजा

चीज चीख घी काजी

जीजी आई ।

जीजा जी आए ।

जीजी जीजा जी एकाएक आए ।

आइए जीजा जी, आइए ।

काकी आई ।

काका जी आए ।

जीजी झिझकी ।

1. नीचे के वर्णों में ि और ी की मात्रा लगाइए, पढ़िए और लिखिए :

ि क ख ग घ च छ

कि ______

ी च छ ज झ ग घ

ची ______

2. नीचे लिखे शब्दों को लिखिए :

झिझक झिकझिक काकी चाची जीजी जीजा

______

______

3. नीचे लिखे शब्दों में ा, ि और ी की मात्रा वाले शब्द छाँटिए और लिखिए :

खाई चिक काई काका झिकझिक
जीजी चीख घी झिझक चीज

ा काई ______

ि ______

ी ______

4. दिए हुए शब्दों से नीचे के वाक्य पूरे कीजिए और उन्हें लिखिए :

आई उग आए

जीजी .... ।

जीजा जी .... ।

जई .... आई ।

5.1. 35 से 65 तक गिनतियाँ क्रम से लिखिए :

35 ... ...
... ...
... ...
... ...
... ...
... ... 65

5.2. छूटी हुई गिनतियों को पूरा कीजिए :

71 ... 73 ... 75 ... 77 78 ... ...
... 82 ... 84 ... 86 ... 88 89 90
91 ... 93 ... 95 ... 97

5.3. 99 से 91 तक गिनतियाँ उलटे क्रम में लिखिए :

99 ... ...

5.4. दो-दो कम करके लिखिए :

30 . 28 ... ...
... ... 2

पाठ 13

ट

टमाटर

ठ

ठठेरा
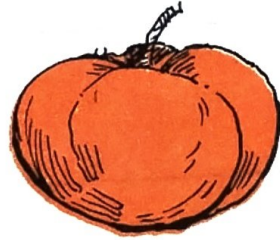
डलिया

घट	घाट	घाटी
काठी	डग	टिकटिक
छठी	टिकट	ठीक
खटका	आठ	टाट
डाट	डाक	खाट
कटाई	ओठ	अंडा
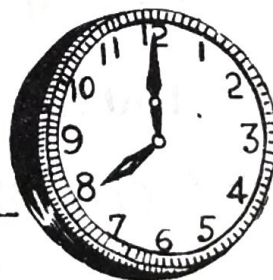
टिकटिक टिकटिक

ठीक ठीक आठ

टिकटिक टिकटिक।

डाक टिकट

खटखट खटखट

खटाखट खटाखट।

1. लिखिए :

ट ______________________________

ठ ______________________________

ड ______________________________

टिकट छठी डाक आठ

____

2. ा, ि और ी की मात्रा वाले तीन-तीन शब्द लिखिए, जैसे :

काका टिकटिक जीजी

ा ______________________________

ि ______________________________

ी ______________________________

3.1. नीचे दिया हुआ नियम जानें :

इकाई 1 (जैसे, 1 2 3 4 5 6 7 8 9)

इकहरी गिनती को इकाई कहते हैं।

दहाई 10 (जैसे, 10 20 30 से 90 तक)

सैकड़ा 100 (जैसे, 100 200 300 से 900 तक)

3 सैकड़ा 5 दहाई 4 इकाई का मतलब है : 354

3 सैकड़ा = 300, 5 दहाई = 50, 4 इकाई = 4

सब मिलाकर = 354 तीन सौ चौवन

3.2. इन्हें लिखिए और पढ़िए :

	सैकड़ा	दहाई	इकाई
532	......	......	......
225	......	......	......
475	......	......	......

पाठ 14

ढ

ढक	ढाक	ढीठ	छकड़ा	जड़	ऋण
कण	कढ़ी	जड़ाई	अढ़ाई	गढ़ी	गाढ़ा
जाड़ा	एकड़	घड़ी	खिचड़ी	ककड़ी	उजड़ा

घड़ी की टिकटिक

टिकटिक टिकटिक ।

काकी उठ गई ।

काका जी उठ गए ।

जीजी उठी । खाट उठाई, चटाई उठाई ।

जीजी, जीजी, ओ जीजी, ककड़ी · · · ।

ककड़ी उग आई ?

उग आई, जीजी, उग आई ।

जीजी की घड़ी ।

घड़ी की टिकटिक, ठीक आठ ।

जीजा जी, आइए ।

ककड़ी खाइए ।

1. लिखिए :

ढ ______ ण ______

ढ़ ______ ड़ ______

ढीठ ______ ऋण ______

घड़ी ______ अढ़ाई ______

2. 'घड़ी की टिकटिक' शीर्षक पाठ के आधार पर नीचे के वाक्यों में छूटे हुए शब्द भरिए :

घड़ी की ______

काकी उठ ______ । काका जी ______ गए ।

______ उठी । खाट ______, ______ उठाई ।

______ उग ______ ।

3. पढ़िए और लिखिए :

ा टा ______ ठा ______ डा ______ ढा ______ ______

ि टि ______ ठि ______ डि ______ ढि ______ ______

ी टी ______ ठी ______ डी ______ ढी ______ ______

4.1. पढ़िए, समझिए और लिखिए :

2 दहाई + 4 इकाई = 24 6 दहाई + 5 इकाई = ...

8 दहाई + 1 इकाई = ... 9 दहाई + 9 इकाई = ...

4.2. इन्हें लिखिए और पढ़िए :

	सैकड़ा	दहाई	इकाई
225	2	2	5
532	......	......	......
475	......	......	......

4.3. लिखिए :

5 सैकड़ा 4 दहाई 7 इकाई = ...

6 सैकड़ा 9 दहाई 6 इकाई = ...

पाठ 15

त

तकली

थ
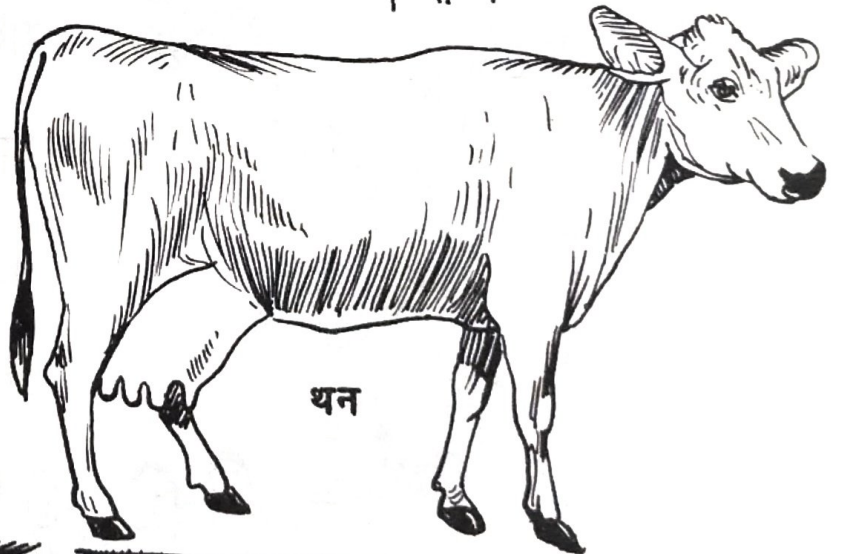
थन

था	थी	तथा	तीज	गीत	कथा
छत	खत	तखत	औकात	जीत	ताकत
तिथि	ताज	कताई	चीता	ताड़	ताई
तीखा	ताक	खाता	छाती	जाति	गाथा
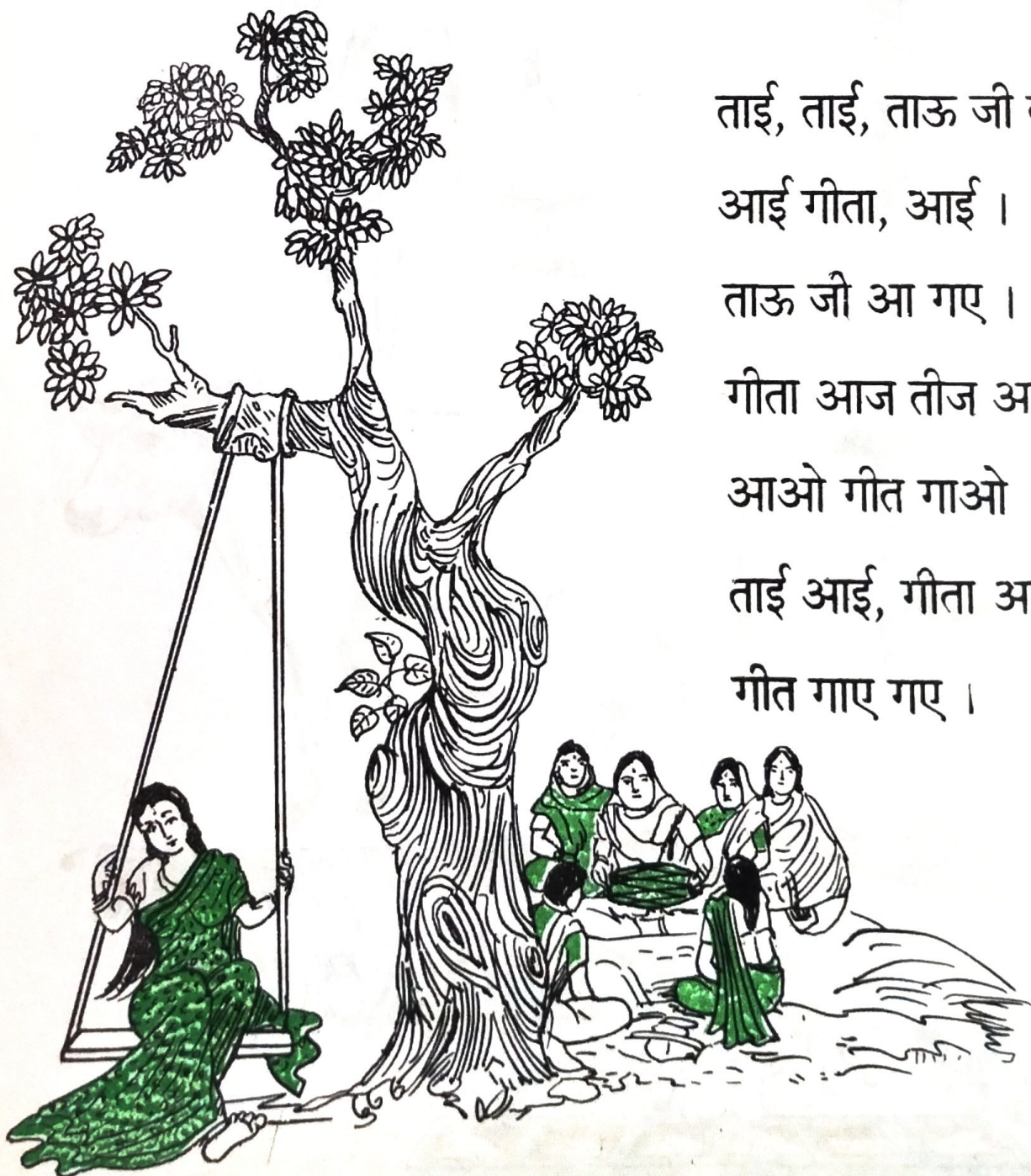
ताई, ताई, ताऊ जी का खत ।

आई गीता, आई ।

ताऊ जी आ गए ।

गीता आज तीज आ गई ।

आओ गीत गाओ ।

ताई आई, गीता आई ।

गीत गाए गए ।

1. लिखिए :

त ____________________

थ ____________________

2. त या थ वर्णों की मदद से शब्दों को पूरा कीजिए और फिर उन्हें लिखिए :

छ—— तख—— औका—— क——

____

____

ताक—— ख—— गा—— जो—— गी——

____

____

3. नकल कीजिए :

ताऊ जी आ गए । ____________________

गीता आज तीज आ गई । ____________________

आओ, गीत गाओ । ____________________

ताई आई, गीता आई । ____________________

गीत गाए गए । ____________________

4. जोड़िए :

जोड़ का मतलब है कि किसी गिनती से उतना आगे गिनना, जितना जोड़ना है। जैसे–

$$\begin{array}{r} 5 \\ +4 \\ \hline \\ \hline \end{array}$$

पाँच में चार जोड़ने का अर्थ है, पाँच के आगे की चार गिनतियाँ गिनकर आखिरी गिनती लिखना अर्थात् 6, 7, 8, 9 यही 9 उत्तर है।

$$\begin{array}{r} 5 \\ +4 \\ \hline 9 \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 6 \\ +2 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 4 \\ +5 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 2 \\ +4 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 3 \\ +1 \\ \hline \\ \hline \end{array}$$

$$\begin{array}{r} 2 \\ +6 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 5 \\ +6 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 7 \\ +11 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 12 \\ +11 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 13 \\ +12 \\ \hline \\ \hline \end{array}$$

$$\begin{array}{r} 10 \\ +14 \\ \hline 24 \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 13 \\ +8 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 18 \\ +13 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 28 \\ +15 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 45 \\ +25 \\ \hline \\ \hline \end{array}$$

$$\begin{array}{r} 42 \\ +38 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 37 \\ +38 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 33 \\ +39 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 18 \\ +39 \\ \hline \\ \hline \end{array}$$

पाठ 16

द

ध

दर्जी

धनुष

न
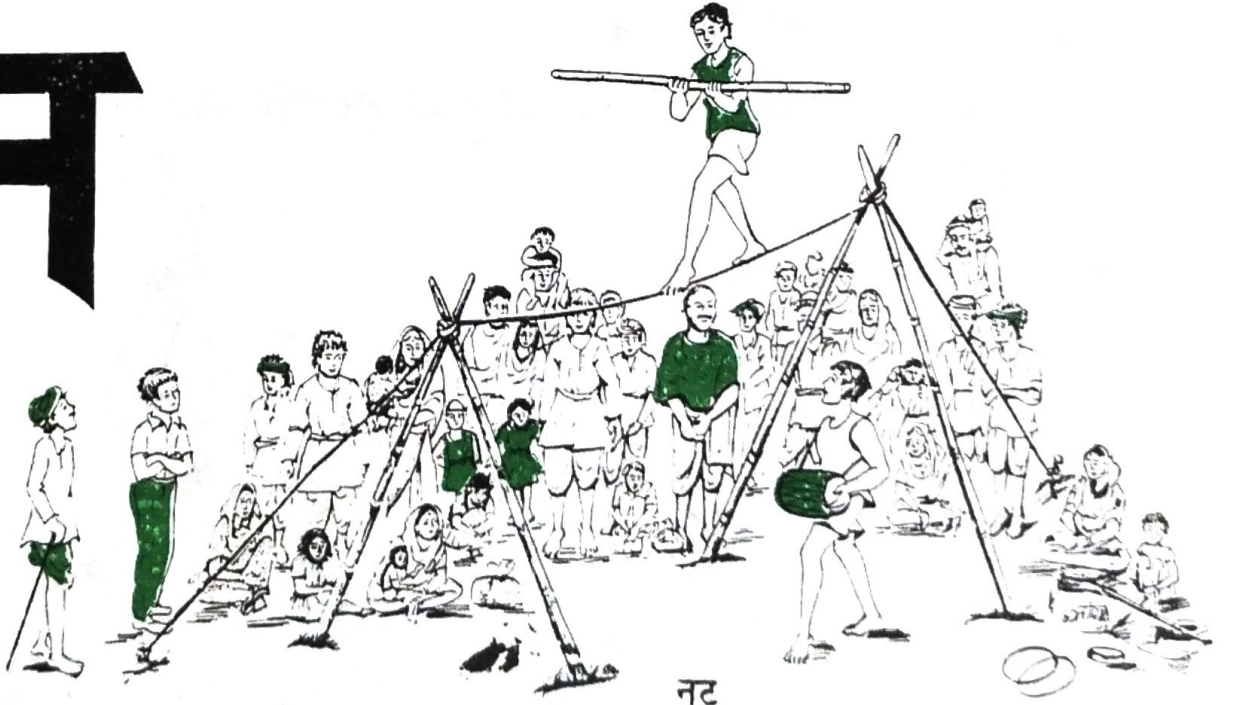
नट

नदी	थन	खान	टन	धन	थान
ओढ़नी	अंधड़	धान	दान	चीनी	छान
गिनती	ननद	अनाज	खादी	अंगद	जानकी
धागा	झीनी	दानी	आदत	नाती	नानी

काकी की ओढ़नी

एक थी गीता ।

गीता कताई जानती थी—ऊन की कताई ।

गीता की ननद थी जानकी ।

जानकी कढ़ाई जानती थी–चिकन की कढ़ाई ।

जानकी ओ जानकी · · · · आ ।

ताऊजी गए, दादी गई ।

काकी की धानी ओढ़नी उठा, काढ़ ।

धानी ओढ़नी कढ़ गई ।

काकी आ गई ननद जी, काकी आ गई ।

आओ काकी की ओढ़नी दिखाओ ।

जानकी काकी की झीनी झीनी ओढ़नी ओढ़ नाचती आई ।

गीता गा उठी ।

ननदी नाची ओढ़ ओढ़नी,
झीनी झीनी कढ़ी ओढ़नी ।

1. लिखिए :

व

ध

न

2. ा, और ी, की मात्राएँ लगाकर शब्द पूरे कीजिए और फिर उन्हें लिखिए :

ा क·न अन·ज ध·न द·न न·न·

ी त·ज च·न· नात· खाद· नान·

3. चित्रों के आगे उनका नाम दो-दो बार लिखिए :

4. नीचे के शब्दों को सही जगह में भरिए :

गीता जानकी कताई कढ़ाई ऊन चिकन

एक थी ________ ।

गीता ________ जानती थी–ऊन की कताई ।

गीता की ननद थी ________ ।

जानकी ________ जानती थी–चिकन की कढ़ाई ।

गीता का धन था ________ की कताई ।

जानकी का धन था ________ की कढ़ाई ।

5. घटाइए :

घटाना जोड़ के विपरीत क्रिया है । जोड़ में आगे को गिनते हैं पर घटाने में पीछे को ।(–) घटाने का चिन्ह है, सीखिए । जैसे–

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

$$\begin{array}{r} 7 \\ -2 \\ \hline \\ \hline \end{array}$$

1	2	3	4	5	6	7
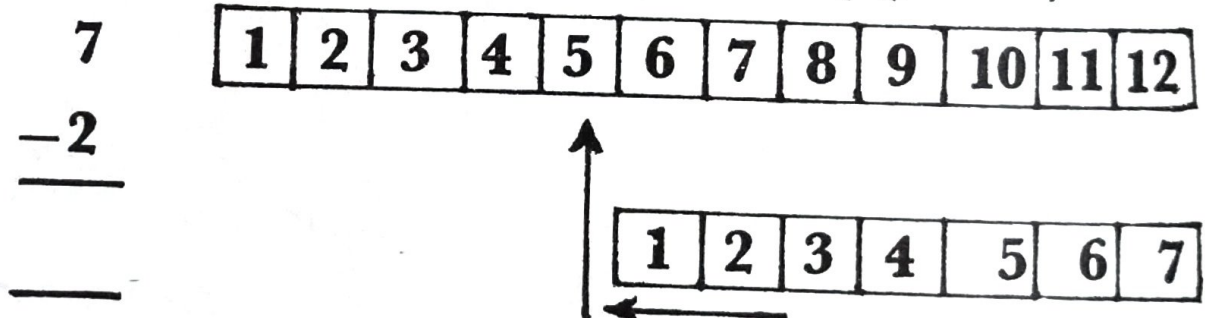
सात में से दो घटाने की क्रिया में सात से पीछे की ओर दो गिनतियां गिनीं अर्थात् 7, 6 इसके बाद की गिनती 5 है । यही जवाब है ।

$$\begin{array}{r} 6 \\ -3 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 5 \\ -2 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 9 \\ -5 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 8 \\ -3 \\ \hline \\ \hline \end{array} \quad \begin{array}{r} 7 \\ -4 \\ \hline \\ \hline \end{array}$$

पाठ 17

उ ु ऊ

ु कु खु गु घु चु छु जु झु

टु ठु डु ढु तु थु दु धु

ू कू खू गू घू चू छू जू झू

टू ठू डू ढू तू थू दू धू

ु

कुटी खुदा गुण धुन कछुआ धुनाई झुनझुना

टुकड़ा डुगडुगी धुनकी नथुनी दुकान अनुज

ू

कूड़ा नाखून गूदा चूड़ी जूड़ा झूठ

टूटना दातून थूनी दूध कानून

इनका एक गीत

ननकू काका का चाक
जदुनाथ दादा की घानी ।
जगनू नाना का तकुआ
जकी चाचा की धुनकी ।

इनका एक गीत
इनकी एक धुन
इनका एक जादू
इनका एक गुण ।

1. नीचे लिखे अक्षरों में ु और ू की मात्राएँ लगाइए और लिखिए :

ु तु थ द ध न ट ठ ड

___

ू कू ख ग छ ज झ न घ

___

2. ा, ि, ी, ु तथा ू मात्राएँ लगाकर शब्द पूरे कीजिए और लिखिए :

ा क क_ च च_ त न_ झ ड़ द न_

....

ि _चक _झझक _कनकी _चकन _कच_ कच

___

ी काक_ ज_ ज_ धन_ ग_ त ज_ त

___

ु धन जताई कछआ दकान नथनी

___

ू नाखन कड़ा चड़ी दध झाड़

___

3. अब तक सिखाए गये वर्णमाला के वर्णों को क्रम से लिखिए :

त थ द ध न च छ ज झ ञ

क ख ग घ ङ ट ठ ड ढ ण

अं अः इ ई ऊ उ ऐ ए ओ औ

अ आ

4. नीचे लिखे वर्णों से बनने वाले तीन-तीन शब्द लिखिए :

त तकली

च

क

न

ग

5. नीचे बने चित्रों को पहचानिए और उनके नाम लिखिए :
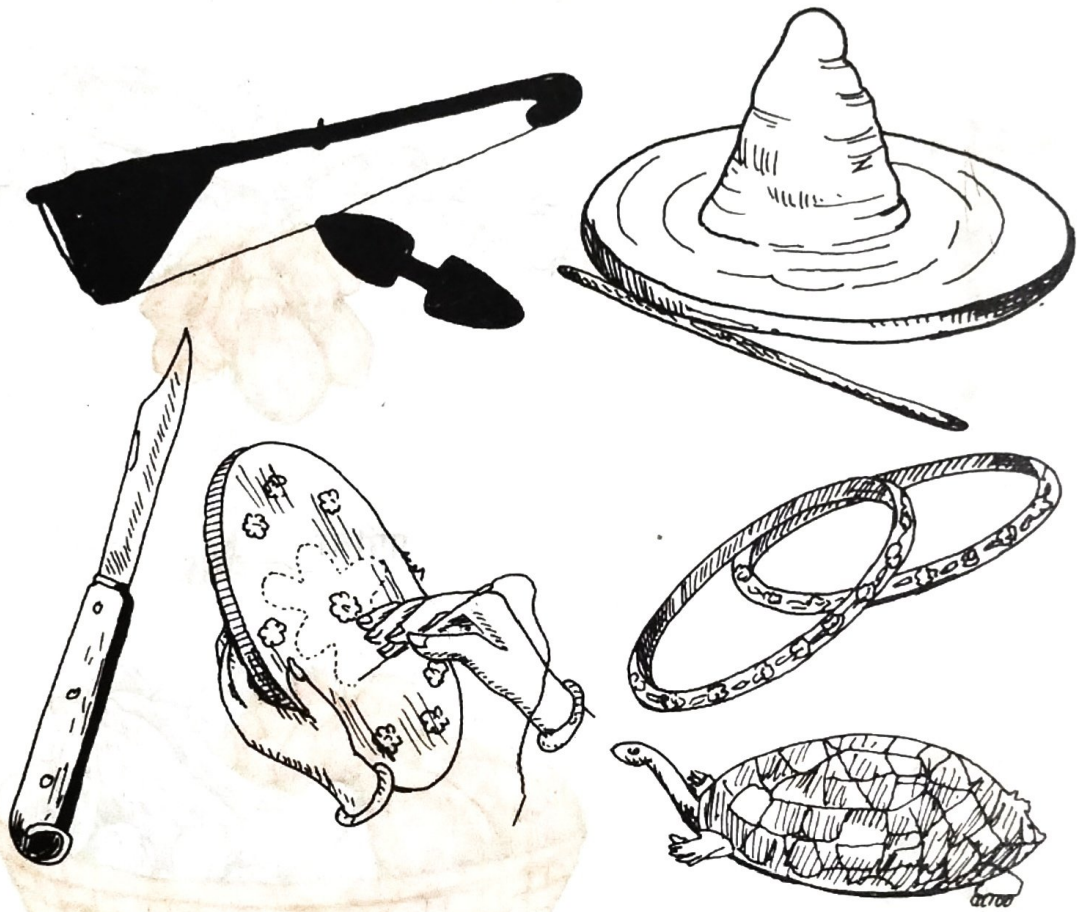
6.1. देखिए :

रहीम, रतन और फुलिया को सात-सात किलोग्राम गेहूँ दिया गया। कुल कितना गेहूँ दिया गया ?

7+7+7=21 किलोग्राम

इसे इस तरह भी लिख सकते हैं:

7×3=21 किलोग्राम

6.2. गुणा कीजिए :

5	6	2	4	5
×4	×3	×8	×7	×6
___	___	___	___	___

पाठ 18

प

फ
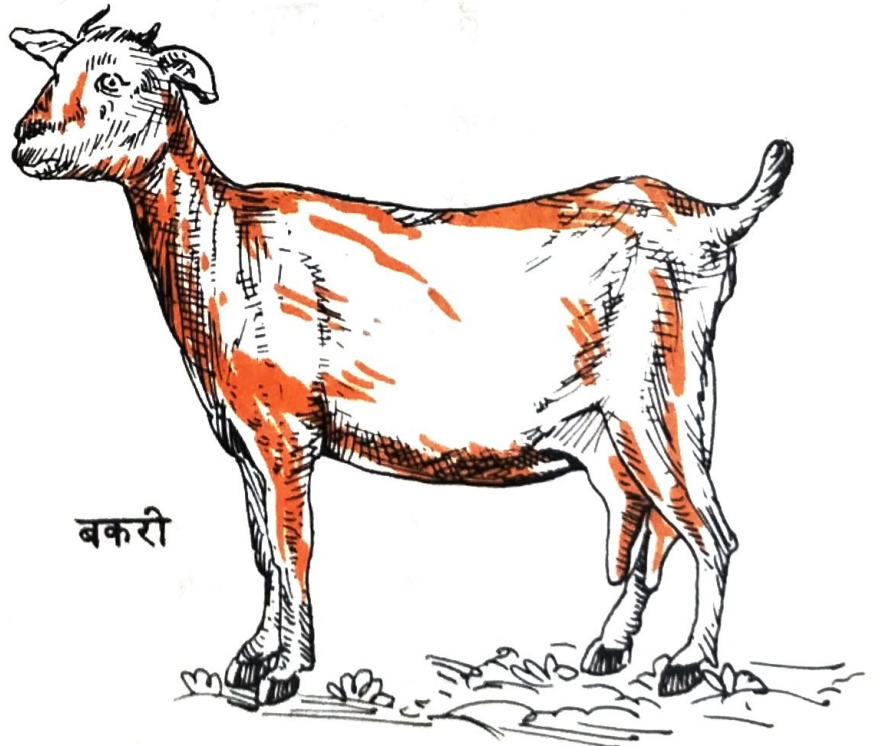
अपना	अब	आप	बापू	बाबा	बाप
पीड़ा	पगड़ी	बीड़ी	झपकी	पीछा	पीढ़ी
पूजन	पूत	पुआ	ढप	गप	बथुआ
उबटन	बदन	उफान	पानी	पापड़	पान

जानकी की बगीची

जानकी की अपनी बगीची थी। जानकी आड़ू उगाती, चीकू उगाती । नीबू, खुबानी तथा पपीता उगाती । जानकी की बगीची का पपीता बड़ा था ।

जानकी पपीता खाती ।
गीता आड़ू खुबानी खाती ।
काकी बथुआ तथा पपीता खाती ।

दादी जानती थी कि बथुआ, नीबू पाचक । पपीता खूब पाचक ।

1. लिखिए :

प ________________

फ ________________

ब ________________

बापू ________________

बथुआ ________________

फाग ________________

2. नीचे लिखे वाक्य पढ़िए और लिखिए :

जानकी की अपनी बगीची थी। जानकी पपीता खाती।

____

गीता आड़ू खुबानी खाती। काकी बथुआ तथा पपीता खाती।

____

____

2. हल कीजिए :

- रामू ने 21 रुपए में 3 मीटर कपड़ा खरीदा। एक मीटर कपड़े का दाम कितना था ?

$21 \div 3$

3)21(7
  21

  ×

$24 \div 6 =$ .... $25 \div 5 =$ ....

$36 \div 9 =$ .... $46 \div 5 =$ ....

$44 \div 4 =$ .... $72 \div 8 =$ ....

पाठ 19

भजन भभूत भूमि भाभी भाग

मकई मामा आम मामी अमीन

जामुन जमीन धमाका भीखम भीड़

आओ भीमा भाई

पूजन का मकान। कथा का दिन था। दीनानाथ जी आए।

जमुना आए। अमीन आए। पूजन की बुआ आई। मगन तथा मदन आए। फातिमा की आपा आई। काफी भीड़ थी।

भीमा आता आता झिझका। भीखम भी झिझका। पूजन छुआछूत न मानता था।

पूजन–आओ, भीखम भाई। तुम भी आओ, भीमा। आदमी की जाति एक, आदमी एक।

1. लिखिए :

भ ____________________

म ____________________

भीमा ____________________

जामुन ____________________

भाभी ____________________

मटका ____________________

2. मात्राएँ लगाकर सही शब्द बनाइए और पढ़िए :

ा	म · म ·	भ · भी	द · म	क · म	उम ·
ो	भ · ड़	अम · न	म · ठा	चाच ·	जम · न
ु	झमका	मछआ	जामन	तम	कमकम
ू	सबत	भत	भख	भमि	भतनाथ

3.1. बीस रुपए और पच्चीस पैसे को इस तरह लिखते हैं :

रु. 20.25 या रुपए पैसे
20 . 25

लिखिए :- रुपए पैसे

- पचीस रुपए पचास पैसे रु. .... या ....
- साठ रुपए पचहत्तर पैसे रु. .... या ....
- पैंतीस रुपए तीस पैसे रु. .... या ....

ध्यान रहे, एक रुपए में 100 पैसे होते हैं।

- एक रुपए पांच पैसे को इस तरह लिखते हैं :- रु. 1.05

लिखिए :-

- पांच रुपए आठ पैसे = रु. ....
- तेरह रुपए तीन पैसे = रु. ....

नोट :-शब्दों में लिखी धनराशि को अनुदेशक पढ़कर बताएं।

3.2. जोड़िए :

रुपए	पैसे
15	. 25
+18	. 40
33	. 65

रुपए	पैसे
28	15
+27	. 65

रुपए	पैसे
64	. 65
+69	. 65

रुपए	पैसे
66	. 70
+89	. 75

रुपए	पैसे
89	. 80
+18	. 65

रुपए	पैसे
28	. 60
+68	. 55

पाठ 20

ै

ए

े						ै				
	के	खे	गे	घे			कै	खै	गै	घै
	चे	छे	जे	झे			चै	छै	जै	झै
	टे	ठे	डे	ढे			टै	ठै	डै	ढै
	ते	थे	दे	धे	ने		तै	थै	दै	धै	नै
	पे	फे	बे	भे	मे		पै	फै	बै	भै	मै

नेक खेत पेट जेब

एक बेटा – एक बेटी

मैदा मैना कैथा पैना

मीठे बैन – देते चैन

केकड़ा देगची अटैची

कुनैन बेचैन फेफड़ा

तभी बात बनेगी

चैत के दिन थे। मैकू के खेत पक चुके थे। मैकू के आदमी कम थे। कटाई की कठिनाई थी। मैकू बेचैन था। एक दिन बैजनाथ आए। बैजनाथ ने मैकू की बेचैनी देखी। अपने आदमी भेजे। खुद भी गए। मैकू की मदद की। खेत कट गए। मैकू की बेचैनी मिट गई।

एक दिन की बात। मैकू बैजनाथ के मकान पर गए। बैजनाथ–"आओ मैकू भाई, आओ।"

मैकू–"बैजनाथ भाई, आपकी मदद ने खेती बचा दी।"

बैजनाथ–"मैकू भाई, जब आदमी आदमी के काम आएगा, तभी बात बनेगी।"

1. नीचे लिखे वर्णों में े और ै की मात्रा लगाइए और लिखिए :

क ख ग घ च छ ज झ

े के ____________________

ट ठ ड ढ त थ द ध न

ै टै ____________________

2. नीचे लिखे वाक्य को लिखिए :

"मंकू भाई, जब आदमी आदमी के काम आएगा, तभी बात बनेगी ।"

____

____

3. घटाइए :

रुपए	पैसे
35	. 65
– 22	. 25

रुपए	पैसे
66	. 70
– 25	. 25

रुपए	पैसे
86	. 75
– 26	. 20

$$\begin{array}{r} 905 \\ -221 \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 650 \\ -247 \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 512 \\ -243 \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 423 \\ -134 \\ \hline \end{array}$$

पाठ 21

य

जय	भय	आय	गाय	राय	चाय
कर	घर	डर	भर	झरना	धरना
रपट	रबर	धरती	चीरा	जीरा	भरती
आरी	यूरिया	रेत	नारी	नागरिक	रेट
भारत	भरत	तैयार	काया	माया	भार
रुपया	गुरु	रूप	जरूरत	रुख	रूखा

भारतमाता	पूजा-नमाज	जन गण मन
छुआछूत	तन-मन-धन	खान-पान
आन-बान	मानी-अभिमानी	पूजा-पाठ
काम-धाम	दया-माया	कढ़ाई-बुनाई

1.1. इन्हें भी जानिए :

(1) तोल की इकाई ग्राम है ।

- 10 ग्राम को 1 डेकाग्राम कहते हैं ।
- 100 ग्राम को 1 हेक्टोग्राम कहते हैं ।
- 1000 ग्राम को 1 किलोग्राम कहते हैं ।
- 100 किलोग्राम को 1 कुन्तल कहते हैं ।
- 10 कुन्तल का एक टन होता है ।

(2) ग्राम से छोटी इकाइयाँ भी होती हैं ।

- 1 ग्राम में 10 डेसीग्राम होते हैं ।
- 1 डेसीग्राम में 10 सेंटीग्राम होते हैं ।
- 1 सेंटीग्राम में 10 मिलीग्राम होते हैं ।

यह तो आप जानते ही हैं कि 1 रुपये में 100 पैसे होते हैं । बाजार में खरीददारी करते समय इन बातों को ध्यान में रखा जा सकता है ।

(1) जितने रुपये का एक किग्रा० उतने 10 पैसों का 100 ग्राम ।
(2) जितने रुपये का 1 किग्रा० उतने पैसों का 10 ग्राम ।
(3) जितने पैसों का 100 ग्राम उसके दस गुने का 1 किग्रा० ।
(4) जितने पैसों का 10 ग्राम उतने रुपयों का 1 किग्रा० ।
(5) जितने पैसों का 1 किग्रा० उतने रुपये का 1 कुन्तल ।
(6) जितने रुपये का 1 किग्रा० उतने 100 रु० का 1 कुन्तल ।
(7) जितने रुपये का एक कुन्तल उतने पैसों का 1 किग्रा० ।

भारत भूमि

भारत भूमि, भारत भूमि

जनम भूमि भी भारत मेरी

करम भूमि भी भारत मेरी,

पाक इरादे, नेक नीति की

धरम भूमि भी भारत मेरी। भारत भूमि ...

कुरान मेरा, गीता मेरी,

पूजा मेरी, नमाज मेरी,

ईद और राखी के धागे

मेरे, गुरुपूरणिमा मेरी। भारत भूमि ...

मेरे तन का कन कन भारत

मेरे मन का कन कन भारत

जितना पाया और कमाया

मेरे धन का कन कन भारत। भारत भूमि

■ द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

1. लिखिए :

य ________________________________

र ________________________________

2. मात्रा लगाकर शब्द पूरे कीजिए और पढ़िए :

ा	ग·य	र·य	यूरिय·	म·य·	रुपय·
ि	यू·रया	नाग·रक	द·रया	·चरायता	
ी	परत·	ज·रा	र·ति	गय·	धरत·
ु	रझान	रई	यग	कदरत	रचि
ू	यरिया	जररत	अमरद	कबतर	रठना
े	रत	रखा	परड़	बर	रजगारी
ै	तयार	बरी	रयत	करत	रन

3. नीचे छूटे हुए शब्दों को भरिए, कविता पूरी कीजिए और लिखिए :

कुरान ________ गीता ________

________ मेरी, नमाज ________ ________

ईद और ________ ________

मेरे गुरुपूरणिमा ________ ________

भारत भूमि ________ ________

4.1. इन्हें भी जानिए :

लम्बाई की नाप मीटर में होती है।

- **1000 मीटर का एक किलोमीटर होता है।**
- **एक मीटर में 100 सेंटीमीटर होते हैं।**

4.2. इन्हें भी समझिए :

(1) जितने रुपये का एक मीटर उतने पैसों का 1 सेंटीमीटर।

अब बताइए :

(1) मारकीन छः रुपये मीटर मिलता है। 2 मीटर 50 सेमी० का दाम कितना होगा ?

(2) खादी का दाम 15 रुपये मीटर है। 2 मीटर 10 सेमी० खादी कितने की मिलेगी ?

(3) टेरीकाट कपड़े का दाम 25 रुपये मीटर है। 3 मीटर 50 सेमी० कपड़े का दाम बताओ।

पाठ 23

लट्ठा

वन

श
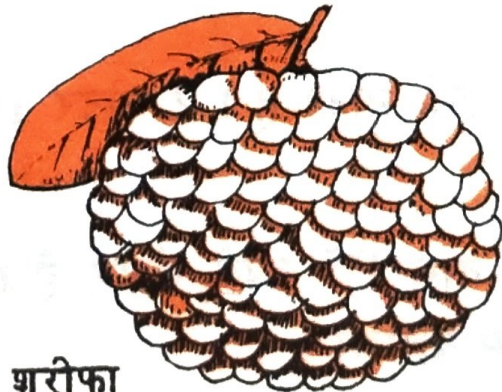
शरीफा

लता	मालती	माला	बालिका
लीक	आलू	गुलेल	
वट	चावल	रवि	वीरता
वेद	वैभव		
शरीर	मशाल	शिव	शीशम
शेर	शैशव		

यश-अपयश	जीवन-मरण	नीति-अनीति	जय-पराजय
मान-अपमान	अपना-पराया	जाने-अनजाने	भलाई-बुराई
देश-विदेश	उतार-चढ़ाव	धूप-छाया	रात-दिन

बड़ा परिवार, दुखी परिवार ।

कटते वन बिगड़ता वातावरण

(कमला तथा रमा की बातचीत)

कमला—मेरी काकी ने बताया था कि राम की शादी के बाद राजा दशरथ ने पेड़ लगाए थे। जानकी जी ने भी पेड़ लगाए थे।

रमा—अपने पुरखे बड़े गुणी थे, कमला। बड़ी दूर की देखते थे। नानी बताती थी कि पेड़ बचपन का झूला और बुढ़ापे की लाठी।

कमला–ठीक रमा, पेड़ हमें लकड़ी देते, छाया देते, फल-फूल देते, जड़ी-बूटी देते। पेड़ पानी लाते, माटी का कटाव बचाते। पेड़ खराब वायु भी ठीक करते।

रमा–तभी पेड़ देवता माने जाते थे। उनकी पूजा की जाती थी।

कमला–पर आज बात उलट गई। आदमी ने अपने मतलब के लिए पेड़ खूब काटे, लेकिन लगाए कम। नतीजा खराब निकला।

रमा–ठीक बात। अब बरखा कम, जमीन का उपजाऊपन कम और उपज कम। जमीन का कटाव बढ़ गया और बाढ़ आने लगी। जीवन के लिए जरूरी वायु भी बिगड़ गई।

कमला–रमा, एक बात और। अब पानी भी पीने के लायक न बचा। घर, नगर और कारखाने का कूड़ा-कचरा पानी खराब करने लगा। जीवन के लिए जल बड़ा जरूरी। भला, खराब पानी जीवन लेगा कि देगा।

रमा–कमला, तभी दीदी ने आज बताया था कि खूब पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ। कूड़ा-कचरा इधर-उधर न फैलाओ। तभी आदमी खुश नजर आएगा। "पेड़ एक लाभ अनेक"।

1. लिखिए :

ल ________ ________ ________ ________

व ________ ________ ________ ________

श ________ ________ ________ ________

लालटेन ________________ थाली ________________

शीशम ________________ वेद ________________

वायु ________________ बालू ________________

2. चौखटे में दिए गए शब्दों को पढ़िए, ल श और व वाले शब्दों को छाँटिए और नकल कीजिए :

ताश	बताशा	केला	बालू	देश
वायु	गली	देवता	वीर	

ल ....

व ....

श ....

3. नीचे लिखे वाक्यों को लिखिए :

पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ ।

____

कूड़ा-कचरा मत फैलाओ ।

____

बड़ा परिवार, दुखी परिवार ।

____

दुखी न कर, अपना घर-बार ।

____

4. इन्हें भी जानिए :

- द्रव पदार्थों की नाप लीटर में होती है ।
- 1 लीटर में 1000 मिलीलीटर होते हैं ।

सूत्र : जितने रुपए लीटर, उतने दस पैसों का 100 मिलीलीटर ।

अब बताइए :

(1) यदि दूध का दाम 4 रुपए लीटर है तो 100 मिलीलीटर दूध कितने में मिलेगा ?

पाठ 24

ओ ो औ ौ

ो को चो टो तो पो

यो रो लो वो शो

ौ गौ जौ डौ दौ बौ

नौ मौ झौ भौ खौ

कोमल	चोट	टोकरी	तोता	पोखर
योग	रोग	लोग	वोट	शोर
कौन	कटौती	तौलिया	पौधा	गौरी
दौलत	बौर	रौनक	लौकी	भगौना

आदमी को कब अकल आएगी

एक था तोता, एक थी मैना। तोते का नाम शुकदेव था और मैना का मिठबोली। शुकदेव और मिठबोली दिन भर इधर-उधर दाना चुगते। वे शाम को लौटते और आकर बरगद की एक डाल पर बैठ जाते। शुकदेव मिठबोली को दिन भर की बीती बताता और मिठबोली शुकदेव को।

एक दिन शुकदेव बोला–"मिठबोली, भोर को जाता था, दाना चुगता था, शाम को लौट आता था। लगता था जीवन कट जाएगा। लेकिन मिठबोली, अब न चल पाएगा।"

मिठबोली "मन दुखी न कर, बात तो बता।"

शुकदेव ने बताया–"गोदावरी तट पर जाया करता था–मधुपुरी। मधुपुरी के धरमपाल बड़े दयालु और धनी थे। उनके घर अनाज की कमी न थी। दरवाजे पर दाना मिल जाया करता था। जब मुझे दूर-दूर खोजने पर भी दाना न मिलता, तो धरमपाल के दरवाजे जाता, भर पेट दाना चुग लेता।"

मिठबोली ने पूछा–तो ?

"मत पूछ मिठबोली, बड़े दिनों बाद आज जब धरमपाल के दरवाजे गया तो न दाना था और न कोई चुगने वाला।"

मिठबोली–"और धरमपाल ?"

शुकदेव–धरमपाल तो थे पर अब उनका परिवार इतना बढ़ गया कि उनको खुद खाने के लाले पड़ गए।

मिठबोली चुप थी। थोड़ी देर बाद एकाएक बोली–"आदमी को कब अकल आएगी।"

1. नीचे के वर्णों में ो और ौ की मात्रा लगाकर लिखिए :

ो क ख ग घ च छ ज झ

को ____________________

ौ ट ठ ड ढ त थ द ध

टौ ____________________

2. नीचे लिखे वर्ण मिलाकर शब्द बनाइए और उन्हें दो-दो बार लिखिए :

गो जो कौ पौ

—धा —बर कम—र प—ड़ी

____

____

____

____

3 हल कीजिए :

(1) रामनगर गाँव की आबादी इस समय 847 है । दस साल पहले 625 थी । इन सालों में आबादी कितनी बढ़ी ?

(2) हरी ने 5 बोरी यूरिया रु० 562.50 में खरीदा । एक बोरी यूरिया का मूल्य कितना है ?

(3) महादेव ने रु० 46.25 की चीनी, रु० 112.50 के कपड़े तथा रु० 228.70 के अन्य सामान खरीदे । उसने दूकानदार को सौ-सौ रुपये के चार नोट दिए । दूकानदार ने कितना वापस किया ?

पाठ 25

ष

भाषण

स

सभा

हवाईजहाज

षडानन, कुपोषण, शोषण, कोष, आषाढ़, दोषी

सच, साहस, सिपाही, सीता, सुपारी, सूप
सेना, सैर-सपाटा, सोना, सौदा, फसल, लहसुन

हल, हाथी, हिसाब, हीरा, हुनर, हुबहू
हेलमेल, हैसियत, होली, हौदा, सहकारिता, सतह

जो पढ़ता है, वही आगे बढ़ता है

हीरामऊ गाँव में सुधार समिति थी। समिति की ओर से सभा की जाती थी, भाषण भी होता था। लोग अपना अनुभव बताते थे। मधुसूदनदास ने कहा था कि कड़ी मेहनत ही कामयाबी का मूल आधार है। शैला को उनकी यह बात याद हो गई। शैला मेहनत से काम करने लगी। वह खूब पढ़ती थी। वह किसी काम को न तो छोटा मानती थी, न बड़ा। जब वह बीस साल की हुई तो उसकी शादी हुई। उसके माता और पिता जानते थे कि बेटी की शादी की सही उमर है अठारह साल के बाद।

शैला की सास शैला को बहुत मानती थी। शैला पढ़ी-लिखी थी। उसकी सास कहा करती थी कि पढ़ी-लिखी बहू घर की शोभा होती है। उसका यह भी कहना था कि हर बहू एक दिन सास बनती है। सास को चाहिए कि वह बहू को बेटी के समान समझे।

शैला के एक लड़का था, एक लड़की थी। अब वे बड़े हो चले थे। वे पढ़ने लगे थे। शैला उनको समझाया करती थी--जो पढ़ता है, वह आगे बढ़ता है।

1. लिखिए :

ष ______

स ______

ह ______

सहयोग ______

शोषण ______

सहकारिता ______

जो पढ़ता है, वही आगे बढ़ता है ।

______

परिवार की सीमा, सुख का बीमा ।

______

2. नीचे वाक्यों के अंश दो भागों में अलग अलग दिए गए हैं। पहले भाग के अंशों को दूसरे भाग के मेल वाले अंशों के साथ जोड़कर वाक्य बनाइए। पूरे वाक्यों को लिखिए :

(1) समान काम के लिए,	बेटी सा समझना चाहिए।
(2) बेटी की शादी की सही उमर है,	समान मजदूरी।
(3) बहू को,	अठारह साल के बाद।

....

....

....

3. प्रतिशत :

प्रतिशत का मतलब है प्रति सैकड़ा अर्थात् एक सौ। 5 प्रतिशत का मतलब हुआ–सौ में पाँच। प्रतिशत (%) इस प्रकार लिखा जाता है। इसे एक उदाहरण से समझिए।

ब्याज 5 प्रतिशत या 5%

इसका अर्थ है कि 100 रु० कर्ज पर 5 रु० ब्याज।

जैसे बसंत लाल ने सहकारी बैंक से 5% सालाना ब्याज की दर से 500 रुपये उधार लिया। साल के अन्त में कर्ज चुकाया। बसंत लाल को 500 रु० मूलधन और 25 रुपये ब्याज, कुल 525 रु० देने पड़े।

अब बताइए :

1. किसन ने 6% ब्याज की दर से 300 रु० बैंक से उधार लिया। साल के अन्त में उसे कुल कितना रुपया वापस देना पड़ेगा ?
2. मंगल ने 10% ब्याज की दर से ट्यूबवेल लगाने के लिए 2000 रु० बैंक से उधार लिया। साल के अन्त में उसे कुल कितना ब्याज देना पड़ेगा ?

पाठ 26

अं ँ अः ः

ं   कं   गं   घं   चं   जं   ठं   मं   लं

ँ   आँ   ऊँ   चाँ   गाँ   दाँ   पाँ   माँ   हाँ

ाः   तः   दुः   अतः   पुनः

गंगा   जंगल   झंडा   पतंग   भंडारण   मंदिर   ईंट

छौंक   पैंठ   आँख   गाँव   हँसी

1. नीचे लिखे शब्दों को लिखिए :

कंघा	धंधा	भंडारण	मंदिर	ईंट	पैंठ
....	....	....	....	....	....
आँख	ऊँट	गाँव	माँ	अतः	पुनः
....	....	....	....	....	....

2. नीचे लिखी बातें पढ़िए और लिखिए :

(1) हरे सागों में जरूरी विटामिन होते हैं। ______________________

(2) बचत का पैसा बैंक में रखने से लाभ होता है। ______________________

(3) बचपन में टीके लगवाने से रोग नहीं होते। ______________________

3. सिंचाई के साधनों के नाम लिखिए :

____

____

4. हरी तरकारियों के नाम लिखिए :

____

____

5. नीचे लिखे संकेतों से शब्द बनाइए और उन्हें चार-चार बार लिखिए :

चं ....

अं ....

कं ....

मं ....

6.1. इनको जानिए और समझिए :

एक दिन=24 घंटा
1 घंटा =60 मिनट
1 मिनट=60 सेकेण्ड

अब बताइए :

- **एक रेलगाड़ी की चाल 40 किलोमीटर प्रति घंटा है। 160 किलोमीटर जाने में कितने घंटे लगेंगे ?**

6.2. घड़ी देखना :

चित्र–1

चित्र–2

चित्र–3

राम 10 बजे खेत से लौटता है।
देखो चित्र 1, इस घड़ी में ठीक 10 बजे हैं। छोटी सुई 10 पर और बड़ी ठीक 12 पर है। अब चित्र 2 देखो। बड़ी 1, 2, 3 आदि पर होती हुई एक पूरा चक्कर लगाकर फिर 12 पर आ गयी है। इतनी ही देर में छोटी सुई 10 से आगे बढ़कर 11 पर पहुँच गई है। एक घंटा समय बीत गया और अब ठीक 11 बजे हैं।
चित्र 3 में 12 बजे हैं। छोटी सुई 1 घंटे में 11 से चलकर 12 पर पहुँच गई और बड़ी सुई एक और चक्कर लगाकर 12 पर आ गई है। अब ठीक 12 बजे हैं और दोनों सुइयाँ 12 पर हैं। अब बताओ नीचे की घड़ियों में कितने बजे हैं :–

पाठ 27

कक्षा

पत्र

क्षमा नक्षत्र पक्षी रक्षक कक्षा

साक्षर शिक्षा क्षेत्र पत्र पुत्री

पत्रिका यंत्र मंत्र त्रिवेणी

यज्ञ आज्ञा ज्ञान विज्ञान

कामकाज आनन-फानन शिक्षा-दीक्षा

चाल-ढाल ज्ञान-विज्ञान पशु-पक्षी

पत्र-पत्रिका तंत्र-मंत्र यत्र-तत्र

ज्ञान-अज्ञान सुख-दुख देर-सबेर

साक्षर-निरक्षर रक्षक-भक्षक पक्ष-विपक्ष

कबीर

कबीरदास का नाम कौन नहीं जानता। वे बहुत ऊँचे संत थे। कबीर ने किसी पाठशाला में पढ़ाई नहीं की थी, लेकिन वे बड़े ज्ञानी थे।

कबीर का पालन-पोषण एक जुलाहे के घर में हुआ था। वे न हिन्दू थे, न मुसलमान। वे थे एक नेक इंसान। वे मानते थे कि सब बराबर हैं। ऊँच-नीच, भेदभाव की बात गलत है।

उस समय भी हमारे समाज में बड़ी कुरीतियाँ थीं। इसलिए वे समाज को खूब फटकारते। वे न हिन्दुओं को छोड़ते, न मुसलमानों को। जात-पाँत पर चोट करते हुए वे कहते–

"कबीर नाहक परि रहे ठानि जाति और पाँति,
मुसलमान हिन्दू नहीं, सबकी मानुष जाति।"

कबीर भिक्षा माँगने और शराब पीने को भी बुरा मानते थे। वे कहते–

"माँगन मरन समान है, मत कोई माँगे भीख।
माँगन से मरना भला, यह सतगुरु की सीख।।"

* * * *

"अवगुन कहूँ सराब का, आपा अहमक होय।
मानुष से पसुआ करे, दाम गाँठ का खोय।।"

कबीर की ये ज्ञान भरी बातें आज भी सब जगह कही-सुनी जाती हैं। वे खुद भले ही साक्षर न रहे हों, लेकिन उनके गहरे ज्ञान ने न जाने कितनों के अज्ञान का अंधकार मिटाया है।

1. लिखिए :

क्ष	…………	…………	…………	…………	…………
त्र	…………	…………	…………	…………	…………
ज्ञ	…………	…………	…………	…………	…………
क्षमा	…………	…………	…………	…………	…………
साक्षर	…………	…………	…………	…………	…………
पत्र	…………	…………	…………	…………	…………
नियंत्रण	…………	…………	…………	…………	…………
यज्ञ	…………	…………	…………	…………	…………
आज्ञा	…………	…………	…………	…………	…………
ज्ञान-विज्ञान	…………	…………	…………	…………	…………
तंत्र-मंत्र	…………	…………	…………	…………	…………

2. कबीर के पाठ मे दिए गए दोहों मे से कोई एक लिखिए :

____

____

3. अनुपात :

अनुपात का मतलब है–हिस्सा या भाग। उदाहरण से समझें–एक किसान के पास कुल 24 बोरी अनाज है। 24 बोरियों में 8 बोरी चना है, बाकी गेहूँ है। 24 में यदि 8 बोरी चना घटा दें $24-8=16$ बोरी गेहूँ बच जाता है। इस बात को हम यों भी कह सकते हैं कि चना से गेहूँ की बोरियां $16 \div 8=2$ गुनी हैं। (भाग देकर) अर्थात् गेहूँ और चना की बोरियों में $2:1$ का अनुपात है।

अतः दो संख्याओं का अनुपात भाग द्वारा उनकी तुलना है। इससे ज्ञात होता है कि एक संख्या दूसरी संख्या की कितनी गुनी है या उसका कौन-सा भाग है।

अब बताइए :

1. रघुबीर ने अपने खेत में 16 कुन्तल गेहूँ और मोहन ने 8 कुन्तल गेहूँ पैदा किया। दोनों की पैदावार में क्या अनुपात है ?
2. राम की जर्सी गाय 20 लीटर दूध देती है और मंगल की गाय 5 लीटर दूध देती है। दोनों की गायों के दूध में क्या अनुपात है ?
3. संतराम एक माह में 1800 रुपए और सोहन 600 रुपए कमाता है। दोनों की आमदनी में क्या अनुपात है ?

वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ

ा ि ी ु ू ृ

ए ऐ ओ औ अं अः

े ै ो ौ ं ँ ः

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ड़ ढ ढ़ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

क्ष त्र ज्ञ

देवनागरी में गिनती

१	११	२१	३१	४१	५१	६१	७१	८१	९१
२	१२	२२	३२	४२	५२	६२	७२	८२	९२
३	१३	२३	३३	४३	५३	६३	७३	८३	९३
४	१४	२४	३४	४४	५४	६४	७४	८४	९४
५	१५	२५	३५	४५	५५	६५	७५	८५	९५
६	१६	२६	३६	४६	५६	६६	७६	८६	९६
७	१७	२७	३७	४७	५७	६७	७७	८७	९७
८	१८	२८	३८	४८	५८	६८	७८	८८	९८
९	१९	२९	३९	४९	५९	६९	७९	८९	९९
१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००

अन्तर्राष्ट्रीय अंक

1	11	21	31	41	51	61	71	81	91
2	12	22	32	42	52	62	72	82	92
3	13	23	33	43	53	63	73	83	93
4	14	24	34	44	54	64	74	84	94
5	15	25	35	45	55	65	75	85	95
6	16	26	36	46	56	66	76	86	96
7	17	27	37	47	57	67	77	87	97
8	18	28	38	48	58	68	78	88	98
9	19	29	39	49	59	69	79	89	99
10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

पाठ 28

संयुक्ताक्षर

पाई हटाकर बनने वाले

ख्–	ख्याल	मुख्य	विख्यात	ग्–	ग्वाला	सुग्गा	भाग्य
घ्–	विघ्न	शत्रुघ्न	कृतघ्न	च्–	अच्छा	बच्चा	सच्चा
ज्–	ज्वार	राज्य	सज्जन	त्–	त्योहार	पत्ता	कत्था
थ्–	पथ्य	स्वास्थ्य	तथ्य	ध्–	ध्यान	संध्या	मध्य
न्–	न्याय	अन्न	गन्ना	प्–	प्यास	चुप्पी	सप्ताह
ब्–	ब्याज	डिब्बा	शब्द	भ्–	अभ्यास	सभ्य	सभ्यता
म्–	म्यान	अम्मा	सम्मान	ल्–	गल्ला	कल्याण	बल्ब
व्–	व्यवहार	व्यवसाय	कव्वाली	श्–	श्याम	ईश्वर	अवश्य
ष्–	मनुष्य	भविष्य	जेष्ठ	स्–	स्लेट	बस्ती	रस्सी
क्ष्–	लक्ष्य	लक्ष्मण	लक्ष्मी				

अच्छा भोजन, अच्छा स्वास्थ्य

एक बड़ी पुरानी कहावत है – 'तंदुरुस्ती हजार नियामत' यानी तंदुरुस्ती ठीक तो सब ठीक है, नहीं तो कुछ नहीं। अपना शरीर स्वस्थ नहीं, तो सारे सुख बेकार। कहा है कि 'पहला सुख निरोगी काया'। तंदुरुस्ती के लिए जरूरी है – शरीर की सफाई, अच्छा भोजन तथा वातावरण की स्वच्छता।

शरीर की सफाई के लिए हमें शौच के पश्चात् नित्य दातून या मंजन से दाँत साफ करने चाहिएं। मुँह धोते और नहाते समय आँख, कान और नाक भी साफ कर लेने चाहिए। इन अंगों को धूल, धुएँ और गन्दे पानी से बचाना चाहिए। स्नान करते समय शरीर के सभी अंगों को मल-मल कर सफाई करनी चाहिए। स्नान के लिए आवश्यक नहीं है कि साबुन ही काम में लाया जाए। साफ पानी से रगड़-रगड़ कर नहाने से भी शरीर स्वस्थ रहता है। नहाने के बाद कपड़े से शरीर को अच्छी तरह पोंछ लेना चाहिए।

सिर के बालों और कपड़ों की सफाई करना बहुत जरूरी है। ऐसा न करने से जुएँ और चीलर पड़ जाते हैं। इनसे बीमारियाँ फैलती हैं। साफ-सुथरा रहने से बीमारियों से बचा जा सकता है।

अच्छे भोजन से शरीर में ताकत पैदा होती है और रोगों से रक्षा होती है। अच्छा भोजन महँगा ही हो, यह जरूरी नहीं है। कम पैसों में भी अच्छा भोजन मिल सकता है।

खाने की चीजों के मुख्यतः छः समूह हैं –

1. पत्तेदार साग–जैसे-मेथी, चना, सरसों, चौलाई, पालक, बथुआ आदि
2. हरी सब्जियाँ–जैसे–लौकी, तुरई, परवल, सेम आदि।
3. अन्य सब्जियाँ–जैसे–गाजर, टमाटर, पका काशीफल आदि।
4. मिली-जुली दालें।
5. मौसमी फल–जैसे–पपीता, नीबू, केला, अमरूद, आम, आँवला आदि।
6. घी, गुड़, तेल, आलू, अन्न आदि।

इन प्रत्येक समूहों में से कुछ न कुछ प्रतिदिन खाना चाहिए। यही संतुलित भोजन है।

पीने के पानी की स्वच्छता पर ध्यान देना विशेष रूप से आवश्यक है। अस्वच्छ पानी पीने से पेट के अनेक रोग हो सकते हैं। पानी को स्वच्छ रखने के लिए कुँओं में समय-समय पर ब्लीचिंग पाउडर डालते रहना चाहिए। घर में पीने का पानी सदा छानकर और ढका हुआ रखना चाहिए।

कहा भी गया है–
'गुरु कीजे जानकर, पानी पीजे छानकर।'

घर और बाहर की सफाई का स्वास्थ्य पर बड़ा असर पड़ता है। घर की सफाई में पूरे घर की स्वच्छता, रसोई घर की स्वच्छता तथा घर की वस्तुओं की ठीक-ठीक व्यवस्था शामिल है। बाहर की सफाई में नाली और गलियारे की सफाई, कुँए या हैंड पंप के आस-पास की सफाई और शौच की उचित व्यवस्था आती है। पानी के निकास के लिए सोखदान, सुधरे शौचालय बनवाने चाहिए। बायोगैस प्लांट से आस-पास का वातावरण तो साफ-सुथरा रहता ही है, और भी सुविधाएँ मिलती हैं। इन्हें बनवाने के लिए सरकारी मदद भी मिलती है।

अच्छा स्वास्थ्य ही सुखी जीवन का आधार है।

1. लिखिए :

मुख्य —— ग्वाला —— ब्याज —— सभ्य ——

विघ्न —— बच्चा —— अम्मा —— गल्ला ——

ज्वार —— त्योहार —— व्यवहार —— ईश्वर ——

पत्र का नमूना

बिजनौर
18-8-87

मित्रवर,

मैं यहां ठीक से हूँ। तुम्हारी कुशलता भगवान से नेक चाहता हूँ। तुमने मेरी पढ़ाई के बारे में पूछा है। वह बहुत अच्छी चल रही है। किताबों से तो पढ़ाया लिखाया जाता ही है, साथ ही अन्य तरीकों से भी तरह-तरह की बातें मालूम होती हैं। पिछले महीने बी० डी० ओ० साहब आए थे। उन्होंने पेड़-पौधे लगाने के बारे में बात की। बताया कि पेड़ों से हवा साफ होती है और ईंधन के लिए लकड़ी मिलती है। परसों ही हम लोगों ने मिलकर गाँव-समाज की परती जमीन में पेड़-पौधे लगाए।

तुम अपनी राजी-खुशी का पत्र देना।

तुम्हारा मित्र,
दौलतराम
गाँव व पोस्ट–बिजनौर,
जिला लखनऊ।

सेवा में
श्री माधव सिंह
मोहल्ला व डाकघर आलमनगर,
लखनऊ–226004

नोट : अनुदेशक पत्र पाने वाले का पता लिखना ऊपर के नमूने के आधार पर समझाएँ।

पाठ 29

(क) घुंडी हटाकर बनने वाले

मक्का	पक्का	चक्की	रुक्का	मक्खन	हुक्का
पंक्ति	क्या	क्यों	अक्ल	क्वार	क्यारी
मुजफ्फर	दफ्तर	रफ्तार	हफ्ता	मुफ्त	कोफ्ता

(ख) ऋ ृ का प्रयोग

हृदय	कृष्ण	कृषि	वृंदावन	कृपा
दृढ़	श्रृंगार	गृहस्थी	सृष्टि	वृथा

भोली राधा

एक दिन की बात है। राधा अपनी सहेलियों के साथ खेलने निकली। खेलते-खेलते वह वहाँ पहुँच गई, जहाँ कृष्ण और उनके सखा खेला करते थे।

थोड़ी देर बाद ही उधर से कृष्ण निकले। दोनों में बातें होने लगीं।

कृष्ण—"कौन हो गोरी, कहाँ रहती हो, किसकी बेटी हो ? इन गलियों में पहले तो कभी नहीं देखा।"

राधा—"देखोगे कहाँ से, हम उधर आते ही नहीं। आएँ ही क्यों, अपने द्वार पर खेलते हैं। हाँ, यह अक्सर सुनते हैं कि नंद का बेटा कृष्ण दही और माखन की चोरी करता रहता है।"

कृष्ण—"मुफ्त में बदनाम क्यों करती हो। तुम्हारा हम क्या चुरा लेंगे। हमारे साथ खेलने चलो न।"

राधा के पास कोई उत्तर न था। उसने अपनी सखी-सहेलियों की ओर देखा। सखियाँ मुस्करा उठीं।

कृष्ण चतुर थे, राधा भोली। राधा सखियों सहित कृष्ण के साथ खेलने चल दी।

1. दो-दो बार लिखिए :

मक्का	________	मुफ्त	________
दफ्तर	________	बाह्य	________
हृदय	________	कृष्ण	________
दृढ़	________	वाक्य	________

2. नीचे के समूहों में से उचित शब्द चुनकर वाक्य बनाइए और लिखिए। उदाहरण देखकर कीजिए।

उदाहरण—शौच के पश्चात् नित्य स्नान करना चाहिए।

शौच के पश्चात्	संतुलित भोजन जरूरी है।
अच्छे भोजन का मतलब	सुखी जीवन का आधार है।
स्वस्थ रहने के लिए	नित्य स्नान करना चाहिए।
नीरोग काया	अनेक रोगों से बचाव होता है।
साफ पानी पीने से	महँगा भोजन नहीं है।

____

____

____

____

____

पाठ 30

वक्त की आवाज

वक्त सत्य

एक बेटा चाँद जैसा
एक बेटी चाँदनी सी,
एक आँगन में उजागर
एक बाहर जगमगाए।

वक्त की आवाज सुन,
उसको समझ, उस पर अमल कर
हो न तू बेहोश वरना,
दुःख भोगेगा जनम भर।

आज धरती पर मनुज का,
बोझ ज्यादा हो रहा है
तू समझ इस सत्य को
उठ नींद में क्यों सो रहा है।

हम नहीं तो कौन इस
अपराध का खतरा उठाए
एक बेटा चाँद जैसा
एक बेटी चाँदनी सी
एक आँगन में उजागर
एक बाहर जगमगाए।

–रमा नाथ अवस्थी

पाठ 31
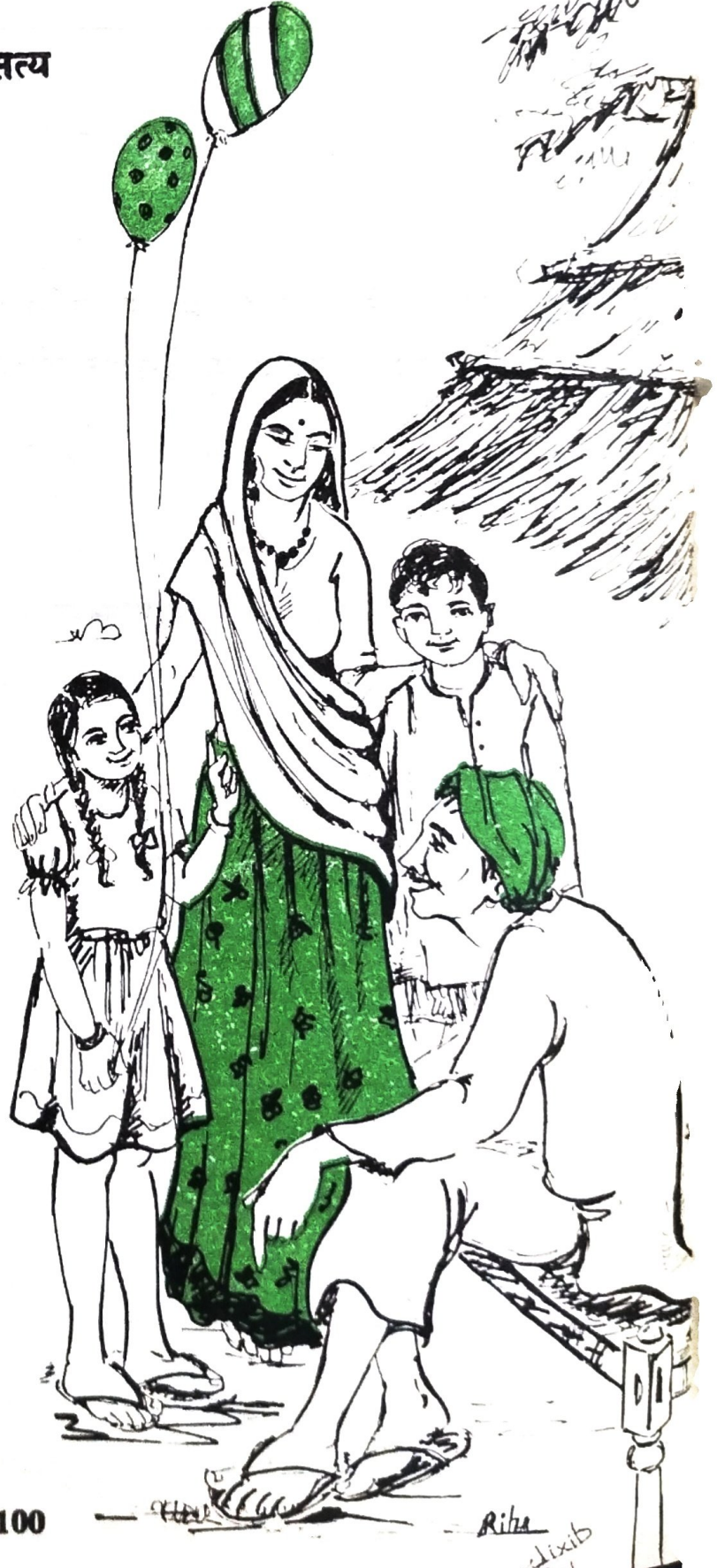
हलन्त लगाकर बनने वाले तथा र के रूप

ट्	मिट्टी	छुट्टी	खट्टा	भट्ठा		
ढ्	धनाढ्य					
ह्	अपराह्न	जिह्वा	आह्लाद	बाह्य		
ड्	हड्डी	बुड्ढा	गड्ढा			
द्	गद्दा	सद्गति	सद्भावना	विद्वान	विद्या	
	बुद्धि	शुद्ध	विद्वान	विद्या	उद्योग	
श्र	श्री	श्रवण	श्रीमान	श्रमिक	परिश्रम	
	श्रम	आश्रम	श्रीमती			
्र	ब्रज	प्रकाश	नम्रता	चक्र	प्रायः	
	प्रातः	ब्रह्मा				
र्‍	कर्म	चर्चा	अर्चना	अर्जुन	मिर्च	खर्च
	पर्व	तीर्थ	बर्फ	सर्दी	स्वर्ग	
्र	ट्रक	ट्राली	राष्ट्र	ट्रेन	ड्रिल	
	ड्रम	कंट्रोल	पेट्रोल			

बढ़ती जनसंख्या–घटते साधन

चालीस साल पहले भारत की आबादी लगभग छत्तीस करोड़ थी। आज हम दुगुने हो गए, यानी लगभग बहत्तर करोड़। यह संख्या प्रतिवर्ष लगभग डेढ़ करोड़ की रफ्तार से बढ़ रही है। इस तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या का हमारे रहन-सहन पर बड़ा बुरा असर पड़ रहा है। यद्यपि स्वतंत्रता के बाद देश में विकास और निर्माण की अनेक योजनाएँ लागू की गई हैं, फिर भी उनका जितना लाभ मिलना चाहिए, वह नहीं मिल पा रहा है। यह स्थिति बड़ी चिंताजनक है।

आज लोगों को अधिक से अधिक परिश्रम करने पर भी जरूरी चीजें नहीं मिल पा रही हैं। पौष्टिक भोजन की कमी है। सबके रहने के लिए मकान नहीं हैं। बच्चों के लिए स्कूलों में प्रवेश की कठिनाई है। दवा-दारू की सुविधाओं में भी कमी होती जा रही है। सड़कों पर भीड़, बसों में भीड़, ट्रेनों में भीड़—चारों ओर भीड़ ही भीड़ नजर आती है। शहरों में तो पैदल चलने में भी कठिनाई होने लगी है।

जनसंख्या बढ़ने से गाँवों में खेती के लिए भी समस्या उत्पन्न हो रही है। खेत बँटते चले जा रहे हैं। खेत छोटे हो जाने से कृषि के नवीन साधनों का पूरा-पूरा लाभ नहीं मिल पा रहा है। इससे खेती सबके लिए लाभकारी सिद्ध नहीं हो पा रही है। बढ़ती जनसंख्या के कारण लोग जंगल काटते जा रहे हैं। इससे वातावरण का संतुलन बिगड़ रहा है और जल-वायु पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

यदि जनसंख्या इसी रफ्तार से बढ़ती गई तो भविष्य में स्थिति विकट हो जाएगी ? पेट-भर भोजन मिलना कठिन हो जाएगा, सिर ढकने के लिये छत भी नहीं मिल पाएगी। बच्चों की शिक्षा की समस्या और भी जटिल हो जाएगी। रोग बढ़ते जाएँगे और चिकित्सा-सुविधाएँ कम पड़ती जाएँगी। देश के विकास के लिए चाहे जितने अधिक प्रयत्न किए जाएँ, बढ़ती जनसंख्या के कारण वे कारगर सिद्ध न हो पाएँगे। तब जीवन बिताना कितना दूभर हो जाएगा, यह सोचकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

इस समस्या को यों नहीं छोड़ा जा सकता। इसका समाधान खोजना ही पड़ेगा। एकमात्र समाधान है–जनसंख्या की बेतहाशा वृद्धि पर रोक। यह मनुष्य के हाथ में है। वह अपनी सद्बुद्धि से अपने परिवार सीमित रख कर इस समस्या को हल कर सकता है। इसी में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का कल्याण है।

पाठ 32

हमारा देश

हमारे देश का नाम भारत है। इसे हिन्दुस्तान भी कहते हैं। भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत है। इसके दक्षिण में हिन्द महासागर है। पूर्व में बंगाल की खाड़ी, बर्मा और बाँगला देश है। पश्चिम में अरब सागर और पाकिस्तान है।

हमारा देश उत्तर में कश्मीर से दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैला हुआ है। पूर्व से पश्चिम तक इसका विस्तार अरुणाचल प्रदेश से लेकर कच्छ तक है।

भारत भूमि को अनेक नदियों ने सींचा है। इनमें प्रमुख हैं-गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा, महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी। देश में जहाँ एक ओर लहलहाते मैदान हैं, वहीं दूसरी ओर बालू भरे रेगिस्तान भी हैं।

भारत के मौसम की अपनी विशेषताएं हैं। यहाँ प्रचण्ड गर्मी भी पड़ती है, मूसलाधार पानी भी बरसता है और कड़ाके की सर्दी भी पड़ती है।

हमारे देश में अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया है। यहाँ राम हुए हैं, कृष्ण हुए हैं। महावीर हुए हैं, गौतम बुद्ध हुए हैं। यहीं अशोक और अकबर जैसे प्रतापी सम्राट हुए हैं। कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, रसखान जैसे संतों, भक्तों और कवियों की वाणी यहाँ आज भी गूँजती है।

भारत में कई प्रदेश हैं। यहां विभिन्न धर्मों को मानने वाले तथा विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले लोग रहते हैं। लोगों के पहनावे भी अलग-अलग तरह के हैं। खान-पान और रीति-रिवाजों में भी अन्तर दिखाई देता है। किन्तु यह भिन्नता केवल ऊपरी है। वास्तव में सब भारतीय हैं, एक ही राष्ट्र के निवासी हैं। हम सब भारत माता की संतान हैं।

हमें अपने इस महान देश पर गर्व है।

राष्ट्र-गान

जनगणमन–अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधितरंग
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जयगाथा ।
जनगण मंगलदायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।

सुखी परिवार

दुखी परिवार